राष्ट्रीय हिन्दी मासिक

वर्ष 8, अंक 12 इलाहाबाद सितम्बर 2009

विश्वस्नेहसमाज

(एक क्रांति)

कीमत 5 रुपये

अरे! भाई इस महगाई में कुछ न पूछो,
जिधर देखो उधर ही ब्रम्हचारी नजर आ रहे है

राजभाषा हिन्दी या अंग्रेजी

अरे भाई इस मंहगाई में कुछ न पूछो

हिन्दी ही विश्व की सम्पर्क_भाषा है

देश में घोटाला कहें या घोटालों का देश कहें

रचनाएं आमंत्रित है

निबंध संग्रह/कहॉनी संग्रह/व्यंग्य संग्रह हेतु

इसमें आरक्षण/भ्रष्ट्राचार/दहेज/जातिवाद/नारी शोषण/ राजनीति से संबंधित आलेख/व्यंग्य रचनाएं/संस्मरण आमंत्रित है. इस बात विशेष ध्यान रक्खें कि रचनाएं १५०० शब्दों से अधिक की न हो. सचित्र जीवन परिचय एक रचना तथा २५०/-रुपये अथवा दो रचनाएं ५००/- रुपये सहयोग राशि के साथ

अंतिम तिथि : १५ दिसम्बर २००६

आप अपनी सहयोग राशि यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की किसी शाखा में खाता सं०:एस.बी. 538702010009259 में सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान के नाम से भी जमा कर सकते है अथवा धनादेश/डी.डी./चेक सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद के नाम से दे सकते है.

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव,
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

पत्रिका के आगामी विशेषांक

अगला विशेषांक :

बाल कवि डॉ० विनय मालवीय विशेषांकः अक्टूबर-०६

■विन्ध्य विशेषांक ■अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी सेवक विशेषांक ■महिला रचनाकार विशेषांक ■पत्रकारिता एवं जनसंचार विशेषांक ■अहिन्दी भाषी रचनाकार विशेषांक

अपनी प्रतियां अभी बुक करवा लेवें। उपरोक्त सभी विशेषांको हेतु संबंधित आलेख/कहॉनियॉ/कविताएं/शुभकामना संदेश/विज्ञापन आमंत्रित है.

प्रकाशन हेतु सम्पर्क करें

अपने काव्य संग्रह, कहॉनी संग्रह, आलेख संग्रह आदि प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षणः

१.मात्र लागत मूल्य पर
२.विक्री की व्यवस्था
३.प्रचार प्रसार की व्यवस्था
४.विमोचन की व्यवस्था

विस्तृत जानकारी के लिए जवाबी लिफाफे के साथ लिखें:

प्रसार सचिव
विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,
एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद–211011
ईमेलः sahityaseva@rediffmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्षः८ अंकः४जनवरी ०६, इलाहाबाद

प्रधान सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

संरक्षक सदस्यः
डॉ0 तारा सिंह, मुंबई
डी.पी.उपाध्याय, बलिया

सम्पादकीय कार्यालयः

एल.आई.जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद
कानाफुसीः 09335155949
ई–मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

आवश्यक सूचनाः

पत्रिका में प्रकाशित किसी भी रचना के लिए लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा। पत्रिका परिवार, प्रकाशक या संपादक का इससे कोई लेना देना नहीं होगा। विवाद के संदर्भ में न्यायालय क्षेत्र इलाहाबाद होगा।

सभी सम्मानित सदस्यों से आग्रह है कि अगर पत्रिका का अंक आपको उक्त माह की 15 तारिख तक प्राप्त न हो तो कृपया हमें एक पोस्ट कार्ड से सूचित करने की कृपा करें अथवा पत्रिका के कार्यालय को सूचित करें.

स्वामी, प्रकाशक,संपादक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा,इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

एक प्रतिः रु०५/–
वार्षिकः रु० ६०/–
विशिष्ठ सदस्यःरु० १००/–
द्विवार्षिकसदस्यःरु०११०/–
पाच वर्ष–रु०२६०/–
आजीवन सदस्यः रु०१००१/–
संरक्षाक सदस्य :रु० २५००/–

देश में घोटाला कहें या घोटालों का देश कहें ०४

राजभाषा हिन्दी या अंग्रेजी ०५

अरे भाई इस मंहगाई में कुछ न पूछो १९

हिन्दी ही विश्व की सम्पर्क भाषा है १३

अन्य

१४ सितम्बर १४ बातें ०६
भारत की नागरी लिपि का परिचय १०
हिन्दी के गौरव स्तर पर ध्यान दें १२
अरे भाई इस मंहगाई में कुछ न पूछो,..... १६

स्थायी स्तम्भः

अपनी बातः देश में घोटाला या घोटालों का देश ०४
प्रेरक प्रसंग – ०५
साहित्य समाचार– २०,२१, २६,३०
कविताएं– १७, १८, २०,२१, २६,२७,२८,३१
कहॉनीः उत्सर्ग १४
अध्यात्मः आत्ममंथन और कर्मयोग २२
स्नेहबाल मंच– २३
कहॉनीः काश वह मुझे बरी कर देता २४
व्यक्तित्वः अखिलेश निगम ‘अखिल’ १८
खेल की दुनिया ३०
आपने कुछ कहा ३१
लघु कथाएं– ३२
मासिक राशिफल ३२
पुस्तक समीक्षा– ३३

अपनी बात

देश में घोटाला कहें या घोटालों का देश कहें

अपने देश में लग रहा है घोटालों की बाढ़ सी आ गई है. जहां यह घोटाले पहले साल में एक या दो होते थे. वह अब महीनें में दो से चार की औसत पर आ गये है. शेयर घोटाला, बोफोर्स, सत्यम्, चारा घोटाला, बैंक घोटाला, बाढ़ घोटाला, ताज घोटाला, जमीन घोटाला जैसे प्रकरण तो बड़े स्तर के थे. लेकिन अब तो घोटाला करना एक रुतबा सा बन गया हैं. जो पदासीन नेता चांहे वो प्रधानमंत्री की कुर्सी पर बैठा हो या ग्राम प्रधान मुखिया के पद पर. हर जगह बस यही ख्वाईश है कि जब तक कुर्सी है जितना लूट सकते हो लूट लो. चाहें जानवरों का चारा हो, गरीबों का अनाज हो, मकान हो, बुजुर्गो की पेंशन हो, जैसे, जिस प्रकार से लूटते बनें लूट लो. इस कार्य में भरपूर सहयोग देने में करने/कराने में बाबूओं व प्रशासनिक अधिकारियों को तो जैसे डाक्ट्रेट इन घोटाला की उपाधि ग्रहण की हो. कैसे करना है, क्या करें घोटला करने के लिए इन नेताओं को रास्ता बताने वाले ये बाबू व प्रशासनिक अधिकारी ही होते हैं. बस उन्हें अपना हिस्सा चाहिए. चाहें जितने भी घोटाले उजागर हुए हैं उनमें बाबूओं व प्रशासनिक अधिकारियों की मिलीभगत अवश्य रही है. जो उजागर ही नहीं हुए उनकी तो बात ही छोड़िए. वैसे तो घोटाले लगभग सभी राज्यों में छोटे बड़े होते ही रहते है लेकिन उत्तर प्रदेश शायद बिहार को भी पछाड़ते हुए प्रथम स्थान प्राप्त कर चुका है. उत्तर प्रदेश में घोटालों को गिनाने की जरुरत ही नहीं. आये दिन कहीं न कहीं, कोई न कोई घोटाला सामने आ ही जाता है. जो छूपे दबे पड़े है उनकी तो बात छोड़ ही दीजिए. इन घोटालों के उजागर करने में मीडिया की महत्वपूर्ण भूमिका है. उत्तर प्रदेश में अभी नरेगा योजना के घोटाले की बात चल ही रही थी कि वृद्धा पेंशन घोटाला खुलकर सामने आ गया. कुछ वृद्धा पेंशन प्राप्त कर रहे बेसहारों की सूची देखिए-० बेटा सचिवालय में पीए, पति गवर्नमेंट प्रेस का रिटार्यड कर्मचारी ० बेटा जल निगम में जेई, १० बीघा खेत, पत्नि ग्राम प्रधान ० गॉव में आलीशान मकान और ट्रैक्टर के मालिक ० बेटा बिजली विभाग में अफसर, पक्का मकान, नलकूप सहित सभी ऐशो आराम के समान ० दो लड़के खाड़ी देशों में, दो लड़के मुंबई में नौकरी ० आठ कमरे का पक्का मकान, निजी नलकूप, मोटरसाईकिल ० तीन सरकारी नौकरी करते पुत्र ०१२ कमरे का पक्का मकान, दो पुत्र नौकरी व अच्छे धंधे में ० उम्र ३५ वर्ष ० मौत १० वर्ष पूर्व ४० वर्षीय पुत्र को पेंशन ० २५-३५ वर्ष उम्र के भी वृद्धा पेशन के पात्र, ० एक आदमी दो बैंक में खाते वृद्धा पेंशन ० ३५ बीघे के काश्तकार ० बेटा पीडब्ल्यू डी में अफसर

ये है वृद्धा पेंशन पाने वालों की कुछ तथ्यपरक पात्रता व सत्यता. यही नहीं एक-एक आदमी दो-दो, तीन-तीन पेंशन ले रहे है अलग-२ बैंको से. कुछ ऐसे भी है टूटी झोपड़ी, बरसात में पन्नी डालकर गुजारा पेंशन नहीं, खेत एक बीसवा, दूसरों के घरो में मजदूरी पेंशन नहीं. ऐसे एक दो नहीं हजारों, लाखों मिल जाएंगे जो वास्तव में वृद्धा पेंशन के हकधार है. लेकिन इनको नहीं मिली. क्योंकि इनके पास ग्राम प्रधानों, पंचायत सचिवों को घूस देने के लिए पैसे नहीं थे. जब तक घूस नहीं मिलेगा तब तक आप वृद्धा पेंशन पाने के हकदार नहीं है.

अभी तो आगे-आगे देखिए होता है क्या? अगर कायदे से जॉच हो तो ऐसे ही हजारों घोटाले मिलेंगें जो राजनीतिक पार्टियों द्वारा (सरकारों) द्वारा लोकहितार्थ बनाए जाते हैं और राजनीतिक पार्टियों द्वारा ही दुरुपयोग किया जाता है. शायद ही कोई योजना हो जो इन घोटालों से अछूत रही हो. बस जागरुक होने की जरुरत है. हम, आपको, मीडिया को, आम आदमी. अगर आदमी जागरुक हो, तो इन घोटालों में कमी तो लायी ही जा सकती है. सबसे बड़ी कमी हमारी और आपकी हैं. जो ऐसे तमाम कमियों को देख कर भी चुप रह जाते हैं कि हमें क्या करना. या स्वयं मौका देखकर लूटने की फिराक में पड़ जाते हैं. ऐसे में हम देश में घोटला कहें या घोटालों का देश कहें कुछ समझ में नहीं आता.

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

प्रेरक प्रसंग

✍ नोबेल पुरस्कार मिलते ही गुरूदेव रवीद्रनाथ टैगोर को बधाई देने वालों का तॉंता लग गया. दूर-दूर से लोगों ने आकर उनका अभिवादन किया. बस, उनसे अगर कोई मिलने नहीं आया तो वह था, उनका पड़ोसी. उसने मन ही मन सोचा कि आखिर सभी लोग इनके चरण क्यों छूते हैं, इनमें ऐसी क्या खास बात है? पड़ोसी के इस उपेक्षा भरे व्यवहार ने टैगोर को भी मन ही मन परेशान किया. वह थोड़ा दुखी भी हुए. अगली सुबह जब वह समुद्र के किनारे टहल रहे थे तो उन्होंने देखा कि सूर्य की स्वर्णिम किरणों के पड़ने से सागर सोने-सा दमक उठा था. प्रकृति प्रेमी टैगोर इस दृश्य को भावविहवल हो देखते रहे, तभी उनकी नजर पास के पानी भरे गड्ढ़े पर पड़ी. प्रातः कालीन सूर्य की किरणें वहॉ भी सोना बरसा रही थी. टैगोर के मन में विद्युत की भॉति यह विचार कौंधा कि जब सूर्य इस कदर समानता रखता है तो मुझमें भेदभाव क्यों? सवाल चरण स्पर्श का है, मेरा पड़ोसी नहीं करता है तो मैं ही उसके चरण छू लेता हूँ. ऐसा सोचते हुए वह पड़ोसी के घर गए, वह टहल रहा था. उन्होंने उसके चरण छूते हुए, उससे आर्शीवाद मांगा. पड़ोसी हतप्रभ रह गया. उसकी ऑखे छलक पड़ी, वह बोला-"आप जैसे ऋषितुल्य व्यक्ति को नोबेल पुरस्कार मिलना सर्वथा उचित है." ऐसा कहते हुए वह उनके चरणों में झुक गया.

✍ स्वामी विवेकानन्द ने जब देखा कि भारत में साधु सन्यासी अकर्मण्य जीवन के पर्याय बन गए है. इससे न उनका भला होता है और न देश का. उन्होने गुरू के अवसान के बाद रामकृष्ण मिशन की स्थापना की, जिसका उद्देश्य मात्र मठ निर्माण नहीं अपितु जनसेवा था. साथियों ने पूछा-"फिर हमारी पूजा-आत्मकल्याण का लक्ष्य कैसे सधेगा? यह काम तो समाज-सुधारकों का है." स्वामी जी बोले-"यही हमारी असली पूजा है. बीमारों की सेवा, अज्ञान निवारण, दरिद्र जनता को संतोष, यदि हम ये तीन कार्य सफलता से कर सके तो ईश्वर हमसे उतना ही प्रसन्न होगा, जितना वर्षो हिमालय में तपस्या करने पर होता."

✍ **दाऊजी**, समाज सुधारक

अदाब अर्ज है

नगर धुये में घिर गये, हवा गयी सब खोय।
सांसे मंहगी हो गयी, पेड़ रहे अब रोय।।

यंत्रों की चिंघाड़ से, शांत भाव भंग।
इंद्रधनुष दिखता नहीं, सभी खो गये रंग।।

भाईचारा खो गया, स्वारथ का बाजा़र।
आम आदमी बन गया, रद्दी-सा अख़बार।।

बड़े-बड़े ऊंचे भवन, भांति-भांति की कार।
नगरों में बदला मिला, इंसा का व्यवहार।।

बात-बात पर खून है, चाकू कें अंदाज।
नगरो में अब कर रहे, छुरे-तमंचे राज।।

भागदौड़ में सब फंसे, आपाधापी खूब।
नगरों में उगती नहीं, गांवों वाली दूब।।

पालिटिक्स चलती यहां, चौराहे पर शोर।
नगरो में ना नाचता, पावस वाला मोर।।

धूप नहीं मिलती यहां, चारों तरफ मकान।
नगर आजकल हो गये, घुटन भरा सामान।।

नगरों ने सब हर लिया, गांवो वाला चैन।
ना ही सुर-लय-ताल है, ना ही मीठे बैन।।

प्रो0 शरद नारायण खरे, मंडला, म.प्र.

दोहे

समय ले गया जब तुम्हें, इन हाथों से छीन।
तड़प रहा हूँ मैं यहॉ, ज्यों जल बाहर मीन।।

मन से जितनी पास हो, तन से उतनी दूर।
कहो 'रसिक' कैसे करें, तुम्हें प्यार भरपूर।।

नयनों में मदिरा भरी, अधर सुधा-रस वास।
आलिंगन में बॉधकर, होता दृढ़ विश्वास।।

खूशबू लेकर आ गई, हवा हमारे कक्ष।
शायद ऑचल गिर गया, खुला तुम्हारा वक्ष।।

डॉ0 सन्त कुमार टण्डन 'रसिक' इलाहाबाद,उ0प्र0

आवरण

राजभाषा हिन्दी या अंग्रेजी

■ अपनी भाषा के बिना कोई भी राष्ट्र हो वह गूंगा है

■भाषा में वह शक्ति होनी चाहिए जिसे जन-जन समझ सके और वह जन-जन की हो सके.

■ वही साहित्य खरा है जिसमें उच्च चिन्तन, स्वाधीनता का भाव हो.

सुखवर्ष कंवर 'तन्हा', दिल्ली

भाषा एक आदर्श समाज के चिन्तन की अभिव्यक्ति है, यह निरन्तर विस्तृत होने वाली सबको प्रेम में लपेट लेने वाली अपने विचार अभिव्यक्त कर अर्थात् अपना हृदय दूसरों के सम्मुख पूर्णता खोलने वाली तथा समझने, समझाने वाला ज्ञान है. भाषा से ही मनुष्य शिक्षित कहलाता है. शिक्षा मनुष्य के शरीर या आत्मा में निहित उस सर्वसौंदर्य और पूर्णता को विकसित करती हैं. जिसकी उसमें क्षमता है. पढने या सुनने से विचार आते हैं. विचार ही हमारी मुख्य प्रेरक शक्ति है. विद्या को प्राप्त करने का अधिकार और क्षमता सब में है. केवल सही रास्ते तथा सही समय की, सही मार्गदर्शन कराने वाले शिक्षक की या बुद्धिजीवी लेखक की जरुरत होती है. क्योंकि लेखक ही व्यक्ति या समाज में परिवर्तन लाता है. जिसकी गोद में सिर रखकर सारे गम शर हो जाते है, उसे माता कहते हे.' विद्या भी माता के समान हित करने वाली है. पिता के समान रक्षा करती हे और चारो दिशाओं में कीर्ति फैलाती है. विद्या हीरा बनाती है और विद्या आती है भाषा से.

अपनी भाषा के बिना कोई भी राष्ट्र हो वह गूंगा है, भाषा एक शहर है जिसके निर्माण के लिए प्रत्येक व्यक्ति को एक-एक पत्थर लगाना पड़ता है. यानि हरेक को मिलकर उस भाषा रुपी शहर को बसाना होगा. यही समाज की सच्ची सेवा और निरक्षर को साक्षर बनाने का रास्ता है तभी सामाजिक व्यक्ति को पूर्ण रूप से साक्षर तथा प्रबुद्ध किया जा सकता हैं. केवल कुछ धन देकर सेवा नहीं होती, बल्कि भाषा की सेवा और समाज को साक्षर करना हो तो समाज रूपी समुन्द्र में डूबकर ही होगी जो प्रबुद्ध विचार जन-जन तक पहुँचाएगी, वही सच्ची भाषा, सच्चा ज्ञान है. ज्ञान तो एक दीपक है जो अज्ञानी मन से अन्धेरा दूर कर उसे उज्जवल बनाता है तथा जीवन में आगे बढ़ने की चाह और राह दिखाता है. लेकिन भाषा में वह शक्ति होनी चाहिए जिसे जन-जन समझ सके और वह जन-जन की हो सके. उसी देश में उसी के भेष में हिन्दी भाषा को मिलना होगा, न की अपने आप को अछूत बना कठिन प्रश्नावली तैयार कर जो कि आम जनता के सिर के ऊपर से निकल जाए ऐसी नहीं होनी चाहिए. हमें तो इसमें गंगा-जमनी मेल करना होगा. बहुत बड़ी-बड़ी डिग्रीयॉ हासिल कर और आम जनता से दूरी रखेगा वह जनता के दिल तक कैसे पहुँचेगा. यह बड़ी-बड़ी पुस्तकें तो केवल कुछ बुद्धिजीवी और ज्ञानी लोगों के लिए है. लेकिन आपको तो समाज सेवा करनी है और अज्ञानी को ज्ञान देने वाली भाषा बनानी होगी (ज्ञान एक मंदिर का दीपक हे इसे नीरव जलने दो इसे कुछ लोगों की सम्पत्ति न बना महलों में मत बन्द रहने दो.) यानि बड़े-बड़े बुद्धिजीवों के लिए इसे मत इकट्ठा करों. गॉव-गॉव, शहर-शहर, पगडंडी-पगडंडी घूमने देना होगा.

हिन्दी को जीवन्त रखने के लिए उसका विस्तार करना होगा. इसे सीमित मत कीजिए. इसके विस्तार के लिए सबको प्रयास करना होगा. जड़े तभी मिट्टी पकड़ती है जब मिट्टी में उन्हें पकड़ने लायक नमी होती है. मुरमुरी मिट्टी में कभी भी जड़ों को नहीं बाधा जा सकता. जब जड़े ही नहीं बंधेगी तो नयी कोपलें कहॉ से मिलेगी. हमें उस मिट्टी को प्यार और दुलार से सींचना होगा. कभी भी थोपे हुए शब्द दिमाग में जल्दी नहीं पहुँच पाते. फिर इन कपोलों की खूशबू तो आपको जन-जन तक पहुँचानी होगी. इसे कठिन और तीव्र गति का ना बनाकर सुन्दर फूल के रूप में जन-जन तक पहुँचाना होगा, "जीवन में जो क्रांतिया होती है वह बाहर से उठकर भीतर की तरफ नहीं जाती बल्कि भीतर से बाहर की ओर उठती है." और यह क्रांतियॉ तभी उठती है जब भीतर जागृति होती है और ज्ञान के दीपक जलते है, जब तक हम अंधेरे भवन में हिन्दी का उज्जवल दीया नहीं जलाएँगे, तब तक हमारे मन का अंधेरा दूर नहीं होगा, और अन्दर के अंधेरों को उजालों में बदलने के लिए बहुत साधना करनी पड़ती है. साधना सादे तथा सीधे ढंग से होनी चाहिए.

भाषा तो एक विस्तृत सागर है जिसमें न जाने कितनी नदियॉ समाहित हो सकती है. इसे संकुचित मत कीजिए. नदी जब सागर में मिलती है तब वह नहीं कहॉ रहती है सागर ही बन जाती है. हिन्दी को सागर बनने दीजिए. दूसरी भाषाओं के कुछ शब्द सम्मिलित करने में हमारी भाषा की महानता कम नहीं हो जाती. हिन्दी को ऐसा फूल बनाओ जिसकी सुगन्ध से कोई भी

अछूता न रह सके. इसे केवल भाषण की भाषा या किताबों तक सीमित मत रहने दो इसको मंदिरों और धार्मिक स्थानों से निकालकर जन-जन तक पहुॅचाना होगा.

विचारों के युद्ध में पुस्तक ही एक अस्त्र है. विचार विद्या से आते है और प्रखर बुद्धि में विचार समाते हैं, ज्ञान से साक्षरता, साक्षरता से अच्छी किताबें पढ़ने का रास्ता खुलता है. यह सब होता है आसान भाषा से, आसान भाषा से ही रुचि पैदा होती है. वह रूचि आप सबने मिलकर हिन्दी के प्रति आम जनता में पैदा करनी है. हिन्दी को हिन्द की भाषा बनाना है. इसे बनाने में अगर सच्ची लगन होगी तो कांटो की परवाह नहीं की जाती. सच्ची लगन हो तो डर कैसा?

फूलों की बातें सब करते हैं,
कांटो की कसक किसने जानी।
आकाश की बातें सब करते हैं,
धरती की तड़प किसने जानी।

यदि पौध अच्छी हो, तो लगन से ध ारती को सींचना होगा. वैस मालूम नहीं दुनिया में कितनी किताबें है, फिर भी आम आदमी से दूर है क्यों? बहुत सी किताबें परन्तु बहुतों से दूर. शिक्षा का भंडार है हमारे देश में फिर भी निरक्षर है. लोग क्यों? गलती कहॉ है यह हमें खोजनी होगी. सूखे रेत के ढेर में भी अवयव के कण मौजूद होते हैं उसमें से वह कण उठाने वाला हंस चाहिए, हंस की तरह विचार चाहिए. सूर्य का प्रकाश, ज्ञान का प्रकाश है. जिस कण पर भी पड़ जाए वह मार्तण्ड हो जाता है. लेकिन सभी साहित्य संबंध ी रत्न केवल अंग्रेजी या दूसरी भाषाओं में ही नहीं है. हिन्दी भाषा में भी उसकी बहुलता है. जो जन-जन को उपलब्ध होने चाहिए. यह कहना गलत होगा कि आज का हिन्दी साहित्य पहली पंक्ति में नही है. चलो मान लिया कि नहीं है फिर भी हम सबको मिलकर उसे पहली पंक्ति में खड़ा करना होगा. आओ मिलकर समुद्र को विषाक्त होने से बचा लें. इसका फिर से मंथन कर समृद्ध हिन्दी रूपी प्याला निकालें, और इसका ठीक ढंग से विभाजन करें जिससे नई सभ्यता का सृजन हो सके और इसमें सबको भागीदार बनाए. यदि जीवन में कुछ करना चाहते हैं तो आत्मविश्वास पैदा करो, उसी पर स्थिर रहो, एकाग्रता से ही सफलता मिलती है. किसी भी काम को करने के लिए एकाग्रता बहुत जरुरी है. अच्छे विचार होने बहुत जरुरी है. वह व्यक्ति कभी अकेला नहीं होता जिसके साथ सुन्दर विचार होते हैं. साक्षरता से ही सुन्दर विचार आते हैं. अच्छी संगती में बैठकर, सच्ची ईमानदारी से किया गया प्रयास कभी विफल नहीं जाता.

हिन्दी में साहित्य रचा जा रहा है. वैसे हर देश, हर प्रान्त की भाषा में साहित्य होता है. वही साहित्य खरा है जिसमें उच्च चिन्तन, स्वाधीनता का भाव हो. सृजन की आत्मा हो, जीवन की सच्चाईयों का प्रकाश हो, जो हममें गति पैदा करे, सुलाए नहीं, क्योंकि अब और सोना मृत्यु आने का लक्षण है. यदि हम बुद्धिजीवी समाज तथा साहित्य को रचने वाले सो गए तो कठिनाई होगी. क्योंकि साहित्य विशेष व्यक्ति की प्रतिभा से ही रचित होता है. लेकिन और भी अधिक सत्य यह है प्रतिभा सामाजिक प्रगति से ही उत्पन्न होती है और सामाजिक प्रगति तभी होती है जब समाज का हर प्राणी साक्षर होता है. साहित्य का उद्देश्य ही मनुष्य को साक्षर करना है. साक्षरता ही मनुष्य में मनुष्यता पैदा करती है, नहीं तो निरक्षर व्यक्ति जानवरों के समान होता है. जिस पुस्तक से मनुष्य का अज्ञान, कुसंस्कार और अविवेक दूर नहीं होता. जिसमें मनुष्य शोषण और अत्याचार के विरुद्ध सिर नहीं उठा सकता. जिस विद्या से वह छीना-झपटी, स्वार्थपरता की दलदल से उभर नहीं पाता वह विद्या, वह ज्ञान किसी काम का नहीं. "विद्या के समान नेत्र नहीं! दृष्टि के समान समाज! विद्या से ही दृष्टि आती है यानि भले बुरे की पहचान विद्या से ही आती है. साक्षर होकर जो साहित्य रचा जाता है या बोला जाता है, उसमें बहुत सा इतिहास होता है. लेखनी हाथ की जिह्वा औ नेत्र की मूक भाषा है." गोरकी ने कहा था अपने मित्रों से कहो जो तुम्हारे लिए साहित्य लिखते हैं कि गॉव के लिए भी लिखें और ऐसा लिखें कि सब मैदान में आकर देश पर मरने के लिए तैयार हो. ऐसा साहित्य सच्चा साहित्य होता है और सच्चा साहित्य सदा अमर रहता है.

इस संदर्भ में मैं भी कहना चाहूंगी कि पढ़े-लिखो के लिए तो सब लिख लेते है. दुनिया में बड़ी-बड़ी कोठियों हैं लेकिन क्या गरीब के घर में या गरीब के झोपड़े में या गरीब के दिल में कैसे झांक सकोगे, जब तक कि धूप में नहीं तपोगे. गरीब के दिल के पास बैठकर. ए.सी.कमरे से बाहर निकलकर ही उसके दिल को छू सकोगे नहीं तो तुम्हारी डिग्रियॉ तुम्हारा साहित्य बेकार है-तो अपने साहित्य को आसान बनाने के लिए हमें गरीब के लिए रचना होगा. जिस साहित्य में उन्हीं की कहानी, उन्हीं के हाथ में रख दो तो कैसा होगा. यह सब होगा समुन्द्र में गहरे पैठ कर ही, गहरे पैठ ही मोती मिलेंगें. ऊपरी सतह पर सब तैर लेते है, अन्दर डूबे तो पता चले. जिससे रूढ़ीवादिताएॅ समाप्त हों ऐसी हिन्दी, ऐसी भाषा दो जो जन-जन की बनकर उभरे. इसी संदर्भ में यह एक शेर प्रस्तुत हैः

हम तो वह कवि है,
जो बादलों में भी घर बना लेते हैं
समुन्द्र में उठती लहरों पर भी, अपने

पैरों के निशान बना देते है.
दिल में पैठकर उसके दिल के दर्द, अपने दिल में समां लेते हैं.

ऐसी शक्ति हर एक में है लेकिन जब तक शब्दों में ताकत न होगी, तो वह सशक्त नहीं होगें. शब्दों में ताकत हो तो खामोशी भी बोल उठती हे, शब्द आते हैं साक्षर होने से. साक्षरता हमारे जीवन में स्वाभिमान और स्वाधीनता लाते हैं. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र आज की हिन्दी के सबसे बड़े रचयिता हैं. उस समय हमारा देश पराधीन था परन्तु उनके प्रयास से हिन्दी को स्थान मिला जो अब तक उसके पास है. लेखक का फलक बहुत बड़ा है उसे सीमित मत कीजिए. सौ वर्ष पहले गुलेरी ने कहा था, "हिन्दी के बिना हिन्द नहीं. " महात्मा गांधी ने कहा था कि "जाओ अपने लोगों को कह दो कि गांधी को अंग्रेजी नहीं आती, क्योंकि अंग्रेजों को ही तो भारत से निकाला है."

लेकिन आज कल तो नए लेखकों को बिल्कुल बेकार समझा जाता है, मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि हमारे समाज में, हमारे साहित्य में राजनीति की पैठ गहरी होती जा रही है. प्रकाशक बड़ा सा मुंह बनाकर नामी-गिरामी लोगों की किताबें छापने से फुरसत नहीं है कहकर नए लेखक को टाल देता है या बहुत बड़ा सा बिल बनाकर उसके आगे रख अपने आपको बहुत बड़ा सिद्ध करना चाहता है. हर लेखक के पास पैसा नहीं होता और यह भी जरुरी नहीं कि जिसके पास पैसा न हो उसके पास बुद्धि नहीं होती. हमारा साहित्य, हमारा समाज साक्षर बनने की राह पर है. इसे आगे ले जाइए और इसे ठण्डे और पवित्र पानी की तरह बहने दीजिए. क्योंकि बहता पानी काफी हद तक गन्दला होने से बच जाता है. इसी प्रकार निरव्रत विद्या रूपी नदी में बहता आदमी कभी-भी निरक्षर नहीं रह सकता. मैथिलीशरण गुप्त ने भी भाषा के सम्बंध में कहा है-"बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय का शूल" इसीलिए हिन्दी भाषा को निजी भाषा बनाइए और इसी संदर्भ में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने हिन्दी को चांदनी सी शीतलता प्रदान की थी. वह शीतलता मत छीनिए. मैं आप लोगों को दोष नहीं दे रही लेकिन कहीं न कहीं हम सब दोषी है.

यदि दूसरी भाषाओं के भी कुछ शब्दों को लेकर अपनी भाषा में मिलाकर उसे विस्तृत किया जाए तो कोई बुराई नहीं है. उसे संकुचित, सीमित मत बनाइए. इसके साथ-साथ मनुष्य को दूसरी भाषाओं का ज्ञान भी यदि हो तो कोई बुराई नही हैं. इसका यह मतलब नहीं की हमने उसे ग्रहण कर लिया तो हम अपनी मिट्टी छोड़ जाएँगें. मैंने विदेश यात्रा के दौरान बहुत जगह पर ऐसे अनुभव किए है कि उनको अपनी भाषा का ज्ञान होने के साथ-साथ विदेशी भाषाओं का ज्ञान भी होता है. लेकिन वो सस्ते में उसे उजागर नहीं करते. जब मैं ऑस्ट्रिया में थी तो मुझे जर्मन नहीं आती थी, बाद में मैंने उसको सीख लिया. परन्तु कभी रास्ता पूछने के लिए अंग्रेजी की जरूरत पड़ी तो वहॉ के स्थानीय लोगों ने अंग्रेजी जानते हुए भी अपने आपको उससे अनजान बनने की कोशिश की. लेकिन जब मैंने अपनी मजबूरी बतायी तो उन्होंने उल्टा मुझ पर सवाल किया कि क्या तुम्हें जर्मन नहीं आती. मैंने जब ना में सिर हिला दिया तो अंग्रेजी में जैसे ही उन्होने बोलना शुरु किया तो मैं अवाक रह गई कि इतनी शुद्ध अंग्रेजी, लेकिन वह लोग अपनी मिट्टी नहीं छोड़ते. इसी तरह भारतीयों को भी सब जानते हुए भी अपनी भाषा, अपना ज्ञान, अपनी हिन्दी नहीं छोड़नी चाहिए.

अंग्रेजी राज में १८८४ में बंगला भाषी केशव चन्द्र सेन ने लिखा था कि "अगर हिन्दी को भारत की एकमात्र भाषा स्वीकार कर दिया जाए तो भारत में एकता का संचार होगा अर्थात् भारत एकता के सूत्र में बंध जाएगा. " दूरदर्शन में या आकाशवाणी में हिन्दी का प्रसारण या हिन्दी में नाटकों की भरमार होती है जैसे पिछले दिनों में महाभारत और रामायण का बोलबाला था तो तब आम व्यक्तियों ने हिन्दी के कठिन शब्द भी प्रयोग करने शुरु कर लिये थे. हमें उम्मीद करनी चाहिए कि नई सहस्त्राब्दी में भी हिन्दी की स्थिति बेहतर होगी. शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके जरिए अधिक व्यस्तता के बावजूद भी हमें हिन्दी को अपने जीवन में उतारना होगा और नए-नए और तरह-तरह के सृजन करने होंगें, नन्हीं मुन्नी पौध पैदा करनी होगी. आज भी लोग प्रेमचन्द्र की लघु-कहानियॉ पढ़ना पसन्द करते हैं. क्योंकि उनमें दिल को छूने की ताकत है. उसी तरह ऊपरी सतह पर पैठ कर कुछ नहीं किया जाएगा. मैं फिर कहूंगी कि गहरे समुद्र में डूबना होगा.

हिन्दी को इतना कठिन न बनाओ कि मुझे यह कहना पड़ें

"अपने गॉव की छांव में ही झुलसे नन्हें पांव,
पीपल नीम भी भूल गए, देना ठंडी छांव
सो आओ आधुनिक हिन्दी से, साहित्य का सृजन करें."

ऐसा साहित्य परोसना हमारा, यानि लेखकों का धर्म है लेकिन साहित्य को समाज के लिए रचना तो लेखक का धर्म है इस धर्म को आगे ले जाने में साथ देना है, प्रकाशक ने और सरकार ने और हिन्दी की संस्थाओं की इसमें बहुत बड़ी भागीदारी होनी चाहिए जो काफी हद तक हिन्दी अकादमी व विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान बखूबी निभा रहे हैं, और मुझे उम्मीद है कि आगे भी निभाते रहेगें. लेकिन प्रकाशकों

को चाहिए केवल वह अपना लाभ न सोच कर जो अच्छा साहित्य हो उसे छापने में लेखक को सहयोग दे ना कि एक दूसरे को खींचने में लगे रहे. मैं सभी बुद्धिजीवियों से प्रार्थना करती हूँ कि यदि किसी को ज्ञान देना है, उसे साक्षर बनाना है तो उसके आगे बड़ी-बड़ी पोथियॉ न रखकर उसे वह ज्ञान दीजिए, जिसकी उसे जरूरत हो. उसमें ज्ञान की, साक्षरता की नींव डालिए, जिससे वह ज्ञान रूपी महल खड़ा कर सके. पहले उसकी मिट्टी की तह तक जाइए, क्योंकि निरक्षर को तो सीधा-साधा ज्ञान चाहिए जो उसे खुशी दे सके. उसके दिमाग में ठीक ढंग से बेठ सके वही ज्ञान वह आत्म साध कर सकता है. उसे बहुत से खाने न परोस कर रोटी के साथ नमक दीजिए जब वह पच जाए तो ध ीरे-धीरे उसे पकवानों की तरफ ले जाइए. क्योंकि उसे पहली बार ही पकवान हजम कैसे होगे, इसलिए हिन्दी को बहता हुआ जल बनाइए ना कि गन्दला. ऐसा ठंडा बहता हुआ पानी बनाइए जिसमें सब हाथ-मुंह धो सके और ठंडक महसूस कर सकें. मेरे कहने का अभिप्राय यही है कि शिक्षा यदि निरक्षर को आसान रूप में मिले तो वह अधिक से अधिक ग्रहण कर सकता है. अब आओ फिर समुद्र को विषाक्त होने से बचा लें. अब फिर साक्षरता के लिए मन्थन कर डालें और उसमें से भाषा रूपी अमृत निकालें और सब में बांटने की कोशिश करें. ऐसा अमृत दो जिसमें कोई देव सो न सके और दैत्य उठ न सके. फिर से नई सभ्यता का सृजन करो आखिर में फिर मैं कहूंगी कि लाज छोड़ो, मिलकर ये कहो, "हिन्दी हिन्द की शान हो तुम, मेरे दिल का अरमान हो तुम"

जीवन में कुछ करना चाहते हो तो आत्मविश्वास पैदा करो. आत्मविश्वास ही सफलता की कुंजी है.

१४ सितम्बर:१४ बातें

१. राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है. राष्ट्र के गौरव का यह तकाजा है कि उसकी अपनी एक राष्ट्रभाषा हो. कोई भी देश अपनी राष्ट्रीय भावनाओं को अपनी भाषा में ही अच्छी तरह व्यक्त कर सकता है.

२. भारत में अनेक उन्नत और समृद्ध भाषाएं है किन्तु हिन्दी सबसे अधिक व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषाा है.

३. हिन्दी केवल हिन्दी-भाषियों की ही भाषा नहीं रही, वह तो अब भारतीय जनता के हृदय की वाणी बन गई है.

४. सर्वोच्च सत्ता प्राप्त भारतीय संसद ने देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी को राजभाषा के पद पर आसीन किया है. अब यह अखिल भारत की जनता का निर्णय है.

५. संसार मं चीनी तथा अंग्रेजी के बाद हिन्दी सबसे विशाल जन-समूह की भाषा है.

६. प्रान्तों में प्रान्तीय भाषॉए जनता तथा सरकारी कार्य का माध्यम होंगी, लेकिन केन्द्रीय और अर्न्तप्रान्तीय व्यवहार में राष्ट्रभाषा हिन्दी में ही कार्य होना आवश्यक है.

७. प्रादेशिक भाषाएँ तथा राष्ट्रभाषा हिन्दी दोनों एक-दूसरे की पूरक तथा सहोदरा हैं. एक दूसरे के सहयोग से वे अधिक समृद्ध होंगी.

८.प्रादेशिक हिन्दी और राष्ट्रीय हिन्दी जैसी कोई चीज नहीं. जिसे आज हिन्दी कहते है, वही राष्ट्रभाषा है और उत्तरोत्तर विकास करके समृद्ध एवं गौरवशली बनेगी.

९. प्रत्येक मनुष्य दो ऑखों से देखता है. भारत जैसे विशाल राष्ट्र के निवासी के पास भी दो ऑखें चाहिए. ये दो ऑखे हैं-१. अपने प्रान्त की भाषा, २. सारे देश के लिए परस्पर व्यवहार की भाषा

१०. हिन्दी का प्रचार करना राष्ट्रीयता का प्रचार करना है. हिन्दी किसी पर न तो जबरदस्ती लादी जा रही है और न लादी जाएगी. वह तो प्रेम का प्रतीक है.

११. कोई भी शब्द चाहे वह किसी भी भाषा का क्यों न हो, यदि वह जनता में प्रचलित है, तो वह राष्ट्रभाषा हिन्दी का शब्द है. आगे भी हिन्दी विभिन्न भाषाओं से शब्द-राशि लेकर समृद्ध बनेगी.

१२. राष्ट्र की एकता के लिए जैसे एक राष्ट्रभाषा होना आवश्यक है, उसी प्रकार एक लिपि का होना भी आवश्यक है. नागरी लिपि में वे सभी गुण मौजूद है, जो किसी वैज्ञानिक लिपि में होना चाहिए. अतः समस्त प्रादेशिक भाषाओं की एक नागरी लिपि हो, यह आवश्यक है.

१३. अंग्रेजी को बनाए रखना हमारी शान और इज्जत के खिलाफ है. वह हमारे देश में रहने वालों के बीच एक दीवार है. इस देश में केवल अंग्रेजी जानने वालों का राज नहीं रह सकता.

१४. कौन कहता है कि दक्षिण में अंग्रेजी बोलने वालों की संख्या ज्यादा है? वहॉ अंग्रेजी जानने वालों से पॉच गुनी संख्या हिन्दी जानने तथा समझने वालों की है.

✍अशोक कुमार शेरी, मेढक, आ.प्र.

मुद्दा

भारत की नागरी लिपि का परिचय

प्रभुलाल चौधरी, उज्जैन, म.प्र.

देवनागरी लिपि के नामकरण के विषय में अनेक मत प्रचलित है. जैसे देवताओं की प्रतिमाओं के बनने से पूर्व, उनके सांकेतिक चिन्ह, जिसे देवनागर कहते हैं पूजे जाते थे. कालान्तर में यही देव-चिन्ह लिपि चिन्ह बन गए और उन पर आधारित लिपि देवनागरी लिपि के नाम से पुकारी जाने लगी. कुछ लोगों का मत है कि प्राचीनकाल में पाटलीपुत्र को नगर एवं पाटलीपुत्र के सम्राट चंद्रगुप्त को देव कहा जाता हैं. इन दोनों के नाम पर नागरी लिपि को देवनागरी कहकर पुकारा जाने लगा. कुछ लोग नागर का संबंध गुजरात के नागर ब्राम्हणों से जोड़ते हैं. उनका कहना है कि नागर से ब्राम्हणों से प्रचलित होने के कारण ही इनका नाम नागरी पड़ा. एक अन्य मतानुसार तांत्रिक ग्रंथो में बने कुछ चिन्ह को देवनागर कहा जाता था. नागरी के अनेक अक्षर इन चिन्हों से मिलते-जुलते लगते थे इसलिए इस लिपि को देवनागरी कहा जाने लगा. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार मध्य युग की एक स्थापत्य शैली का नाम नागर था जिसकी आकृतियॉ चौकोर होती थी. नागरी लिपि के अधिकांश अक्षर चूंकि चौकोर है, इसी कारण इसे 'नागर' या 'नागरिक' कहा गया. इसके बाद सम्मानसूचक देव शब्द जुड़ जानो से इसका नाम देवनागरी हो गया. कुछ विद्वानों का मानना है कि इस लिपि का प्रचार देवनगर (काशी) में हुआ. इसलिए इसका देवनागरी पड़ा. नगरों में प्रचलित होने के कारण यह लिपि 'नागरी लिपि' के नाम से पुकारी गई, यह भी मान्यता मिलती है. कुछ विद्वान नाग लिपि के कारण नागरी नाम स्वीकारते है.

भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा हिन्दी है और इसकी लिपि देवनागरी. इस लिपि का विकास ब्राम्ही लिपि की उत्तरी शैली से हुआ है. ब्राम्ही लिपि विश्व की प्राचीन लिपियों में से एक है, इसके प्राचीनतम लेख ईं. पूर्व पॉचवी शताब्दी तक के उपलब्ध होती है. अशोक के स्तम्भ ओर शिलालेखों में सर्वप्रथम ब्राम्ही के दर्शन होते हैं किंतु साहगौरपट्ट, पिप्रावा और बर्ली के लेखों से इस लिपि की प्राचीनता उत्तर भारत में नवी शताब्दी के अंतिम चरण में ही उपलब्ध थी. इसी का नाम दक्षिण भारत में आठवी शताब्दी में नंदिनागरी थी. भारत में पंद्रहवीं शताब्दी तक प्राचीन नागरी का ही प्रचार था और आधुनिक नागरी लिपि का विकास सोलहवीं शताब्दी में हुआ. छठी शताब्दी में गुप्त लिपि से सिद्ध मंत्रिका लिपि बनी. सातवी और आंठवी शताब्दी में ब्राम्ही से कुटिल लिपि का विकास हुआ. देवनागरी का विकास भारत में सातवीं और आठवीं शताब्दी में ब्राम्हीं से कुटिल लिपि का विकास हुआ. देवनागरी का विकास भारत में सातवीं शताब्दी से ही आरंभ हो चुका था. गुजरात के राजा जयभट्ट के समय में देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग सातवीं-आठवी शताब्दी के शिलालेखों में मिलता है. छठवीं शताब्दी में राष्ट्रकूट राजाओं की आज्ञायें देवनागरी लिपि में ही लिखी जाती थी तथा नवीं शताब्दी में बड़ौदा में राजा ध्रुव की राजाज्ञाएं और आदेश इसी लिपि में मिलते हैं. दक्षिण भारत में भी कोंकण और विजयनगर में देवनागरी का प्रयोग होता था. महाराष्ट्र में यह नागरी लिपि बालबोध के नाम से प्रचलित हुई. स्पष्ट है कि देवनागिरी से मैथिली, बंगला, गुजराती, महाजनी, गौडी आदि लिपियों का विकास हुआ है.

देवनागरी के नामकरण पर विभिन्न मत प्रचलित है. नागरी का संबंध गुजरात के नागर ब्राम्हणों से भी माना जाता है, इन्हीं नागर ब्राम्हणों से प्रचलित होने के कारण इस लिपि का नाम नागरी पड़ा. यह भी मान्यता है कि प्राचीनकाल में पाटलीपुत्र नगर और वहां के सम्राट चंद्रगुप्त को देव कहते थे, इन्हीं के नाम पर नागरी लिपि को देवनागिरी नाम से अभिहित किया गया. ऐसा भी माना जाता है नागरी के अनेक अक्षर तांत्रिक ग्रन्थों में बने कुछ चिन्हों से मिलते-जुलते हैं. इन चिन्हों को देवनागर कहा जाता है. और इसी कारण इस लिपि को देवनागरी कहा जाने लगा. यह भी माना जाता है कि देवताओं की मूर्तियां बनने से पूर्व उनके सांकेति चिन्ह पूजे जाते थे. जिन्हें देवनागर कहते थे और बाद में इन्हीं चिन्हों ने लिपि का रुप धारण किया जिसे देवनागरी कहा गया. भाषा शास्त्री डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार मध्य युग की एक स्थापत्य शैली का नाम नागर था जिसकी आकृतियॉ चौकोर होती थी. नागरी लिपि के अधिकांश अक्षर चूँकि चोकोर है, इसी कारण इसे 'नागर' या 'नागरिक' कहा गया और बाद में 'देव' शब्द इससे जुड़ा. देवनगर (काशी) में इस लिपि का प्रचार होने से भी इसे देवनागरी कहा जाने लगा. यह भी माना जाता है कि नगरों में प्रचलित होने के कारण इस लिपि को नागरी लिपि कहा गया.

नागरी या देवनागरी लिपि का विकास ब्राम्ही लिपि की उत्तरी शैली से हुआ. इस लिपि से गुजराती, महाजनी, गौड, कैथी, मैथली, बंगला आदि लिपियों का विकास हुआ है. इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि यह विश्व की प्राचीनतम्

लिपियों में से एक है. इस लिपि से संसार की अनेक प्रमुख लिपियों का विकास हुआ है. यह लिपि, हमारे देश की श्रेष्ठ, व्यापक, राष्ट्रीय वैज्ञानिक लिपि है. देवनागरी लिपि का वैज्ञानिकता पर विचार करने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि एक वैज्ञानिक लिपि में या आदर्श लिपि में निम्नलिखित गुण होना चाहिये.

–आदर्श लिपि के लिए यह आवश्यक है कि उसमें ध्वनि और लिपि में साम्य पाया जाये अर्थात् जो बोला जाए लिखा जाए, और जो लिखा जाए वही बोला जाए.

–एक ध्वनि के लिए एक ही लिपि चिन्ह हो अर्थात् ध्वनि और उसके संकेतों में निश्चितता हो.

–आदर्श लिपि में किसी भाषा की समग्र ध्वनियों को अंकित करने की पूर्ण क्षमता होनी चाहिये.

– लिपि का सुपाठ्य और संदेहरहित होना भी आवश्यक है. एक संकेत में दूसरे का भ्रम नहीं होना चाहिये.

–सौंदर्य भी एक महत्वपूर्ण गुण है, जिसका आदर्श लिपि में होना अपेक्षित है.

–यांत्रिक सौंदर्य भी वैज्ञानिक लिपि के लिए आवश्यक है, जिससे टंकण या मुद्रण में सुविधा हो.

–आदर्श लिपि के लिए यह भी अनिवार्य है कि वह शीघ्रता से लिखी जा सके, क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में आशु लेखन की सुविधा आवश्यक है.

उपर्युक्त सभी गुण देवनागरी लिपि में मिलते है. इसमें ध्वनि एवं लिपि में पूर्ण साम्य है, अर्थात् जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है. हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं जिनको रोमन में लिखने में अर्थ का अनर्थ हो जाएगा. जैसे पढ़ना और पड़ना, बढ़ा और बड़ा. इन शब्द युग्मों के अर्थ अलग–अलग हैं.

भारत में लगभग बारह लिपियां प्रयोग में आती है. लिपि भेद से भिन्नता बढती है. अतः देश में एकता की स्थापना की दृष्टि से आचार्य विनोबाजी ने एक सहलिपि की आवश्यकता का अनुभव किया और देश की सभी भाषाओं को अपनी लिपि के साथ नागरी लिपि में भी लिखने का आग्रह किया. भारतीय संविधान में भी राष्ट्रलिपि के रुप में इसे ही मान्यता प्राप्त है.

नागरी लिपि का प्रचार भौगोलिक दृष्टि से समस्त हिन्दी प्रदेश में तथा मालवा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र में है और प्राचीनता की दृष्टि से इनका संबंध भारत की सबसे पुरानी ब्राम्ही लिपि से है. नागरी की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि हम जो लिखते हैं, वही पड़ते भी है. लिखे हुए निश्चयात्मक ढंग से पड़ा जाना किसी भी लिपि का सर्वश्रेष्ठ गुण होता है, और वह नागरी में सर्वाधिक मात्रा में है.

जिस प्रकार किसी भी बहुभाषी के लिए राष्ट्रभाषा के रुप में कोई एक भाषा आपेक्षित है, उसी प्रकार बहुलिपि वाले राष्ट्र के लिए संपर्क-लिपि के रुप में एक लिपि अत्यंत आवश्यक है. भारत एक बहुलिपियों वाले राष्ट्र के लिए संपर्क-लिपि के रुप में एक लिपि अत्यंत आवश्यक है. भारत एक बहुलिपियों वाला राष्ट्र है, वहां दर्जनों लिपियों का किसी न किसी रुप में व्यवहार होता है, यथा ब्राम्ही, खरोष्ठी, गुप्त, कुटिल, देवनागिरी, शारदा, बंगला, तेलगु, कन्नड़, ग्रन्थ, तमिल, मलयालम, गुरुमुखी, गुजराती, मैथिली, कैथी, महाजनी, उर्दू तथा रोमन लिपि आदि.

भाषा मानव समाज के लिए एक ऐसा बहुमूल्य साधन है जिसके माध्यम से प्रत्येक मनुष्य अपने मन के विचार-विकारों को दूसरों के सम्मुख भली-भॉति अभिव्यक्त कर सकता है. वस्तुतः भाषा एक आलौकिक देवी शक्ति है, जो मानव को मनुष्यता प्रदान करती है. और उसका स्थान तथा पद अन्य प्राणियों से ऊपर उठा सकती है. मानव के मनोभावों का कथित और लिखित रुप में व्यक्त करने का साधन भाषा है, तो लेखन क्रिया के प्रयोग में लाने के लिए लिपि का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है. भाषा के बिना लिपि का कोई अस्तित्व नहीं और लिपि के बिना भाषा की स्पष्ट अभिव्यक्ति भी संभव नहीं. शब्द रुपी आत्मा का शरीर लिपि है. अतः हम स्पष्ट रुप से कह सकते है. भाषा और लिपि का घनिष्ठ संबंध है. इस लिपि में कम से कम अक्षरों का प्रयोग होता है, रोमन की भॉति इसमें अधिक स्वर नहीं लगाने पड़ते हैं. रोमन् की तुलना में देवनागरी में कम स्थान की अपेक्षा रहती है और कम समय में लिखी जाती है.

भारत की अधिकांश मुख्य लिपियों का मूलाधार ब्राम्ही लिपि है, जो कि भारत की सबसे प्राचीन लिपि मानी जाती है. आज संस्कृत, हिन्दी, मराठी, नेपाली, आदि नागरी में लिखी जाती है. जबकि बंगला, गुजराती, अवधि, मागधी, कोकिर्णी, डोंगरी, सिधी की लिपि भी देवनागरी में अटूट संबंध रखती है. देवनागरी एक वैज्ञानिक भारतीय लिपि है और उसकी कई विशेषताएँ है. जिसमें भारत की सभी भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि स्वीकार करके उपयोग लायक है.

भारत में विविध भाषाऐं होते हुए भी एक लिपि नागरी का उपयोग आसानी से कर सकते हैं. इसके अनुसार देखे तो भारत में विविध भाषाऐं होने पर भी एक लिपि नागरी का उपयोग करें तो भारत भर के लोगों को अन्य भाषाऐं सीखने और राष्ट्रीय एकता को कायम रखने में सुविधा प्राप्त हो जाएगी. इस आधुनिक जमाने में देश-विदेश में सफर करने की जरुरत और सुविधा के कारण मानव मन में अनेक भाषाऐं सीखने की इच्छांए होती है, पर सबसे बड़ी रुकावट उनकी लिपि की भिन्नता

हिन्दी के गौरव एवं स्तर पर ध्यान दें

मैं देश के हिन्दी अधिकारियों से यह पूछना चाहता हूँ कि आज हिन्दी भाषा को आखिर इस सतरह क्यों धकेला जा रहा है.

प्रथम भाषा हिन्दी का दिन प्रतिदिन स्तर गिरता जा रहा है. छात्रों को मुफ्त में अंक दिये जा रहे हैं. छात्रों को हिन्दी भाषा नहीं सिखायी जा रही है. केवल ढकेल दिया जा रहा है. देखिए-प्रथम भाषा हिंदी का आठवी कक्षा का सरकारी प्रश्न पत्र (त्रैमासिक) २००१-०६ तक का. प्रश्न संख्या ४ में पूर्व पॉच प्रश्न देकर चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए, जिसके २० अंक. अब उसे चार या पॉच प्रश्न देकर उसमें से कोई दो उत्तर लिखने को कहा गया. एक उत्तर के लिए १० अंक निर्धारित किये गए.

इन सबका ब्यौरा देने का मकसद यह कि इतने ज्यादा अंक दे रहे है और प्रश्न ऐसे पूछे जा रहे है जो केवल दो-तीन पंक्तियों में दिए जा सकते है. जैसे-
१. सुब्रहण्यम को भारती की उपाधि किसनसे दी? २. राजा प्रसेनजीत क्यों ब्याकूल थे? ३. सुब्रहण्यम भारती की वेशभूषा कैसी थी?

इस प्रश्न पत्र में निबन्ध के लिए भी दस अंक दिया गया है. साम्य कहॉ है? यह कहां का विधान है? यह कैसी मनोविज्ञान है? द्वितीय भाषा की प्रश्न-पत्र तो इससे बेहतर है. इस विषय पर कौन सोचेगा? सरकार तो अंग्रेजी पर ध्यान दे रही है. राष्ट्र भाषा की ओर उनका ध्यान नहीं जा रहा हैं. हिन्दी के नाम पर खर्च तो होरहा है लेकिन हिन्दी अधिकारी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं. उन्हें तत्काल इस पर ध्यान देना चाहिए.

✍अशोक कुमार शेरी, मेढ़क, आ.प्र.

है. यदि प्रत्येक भाषा का साहित्य देवनागरी लिपि में भी मुद्रित हो जाता है तो लोगों को आसानी से अन्य भाषाएं सीखने की तत्परता और सुविधा मिल जाएगी.

जहां तक अन्य भाषाओं का संबंध मराठी की लिपि तो नागरी है ही, बंगला, उड़िया, असमीय, गुरुमुखी, गुजराती आदि लिपियां भी नागरी के अत्यंत निकट है. यदि इन भाषाओं को नागरी लिपि में लिखा जाए तो कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता. नागरी लिपि भारत की अन्य भाषाओं द्वारा भी अपनाई जा सकती है. इसका प्रमुख कारण है संस्कृत भाषा की लिपि भी नागरी ही है.

देवनागरी वर्णमाला में ५२ वर्ण है. अतः हमारे सारे वर्ण अलग उच्चारण देते है. अल्पप्राण और महाप्राण का अपना प्रयोग है, इसमें संयुक्ताक्षर है. रोमन की तरह इसमें महाप्राणों को लिखने की समस्या नही है. देवनागरी में अनुनासिक ध्वनियां भी है जो नियम के अनुसार स्ववर्गीय वर्ण के पहले है. देवनागरी लिपि में लिपि चिन्ह, अक्षर और शब्द भेदन के लिए शिरोरेखा का प्रावधान है, इससे शब्दों को अलगाने की व्यवस्था है. इससे इस लिपि में स्पष्टता आती है. इसमें सारे अक्षर एक सामान्य परंपरा से लिखे जाते हैं बड़ा छोटा वर्ण लिखने की आवश्यकता नहीं है जैसे रोमन में है. फिर भी इस लिपि में सुधार लाने के लिए कई बार प्रयत्न किए गए और इसे सरल तथा भ्रम रहित बनाने का प्रयोग भी किया गया. कई समितियां समय-समय पर बनाई गई. इस दिशा में केद्रीय हिन्दी निदेशालय, भारत सरकार का प्रयास प्रशंसनीय है. इस विभाग के द्वारा मानक वर्णमाला भी तैयार की गई है. जिससे देवनागरी सरल व पूर्ण लिपि बन गई है. देवनागरी का ध्वन्यात्मक मूल्य अधिक है यदि इसमें कुछ नए ध्वनि-चिन्ह भी अपनाए जाऐं तो यह अंतराष्ट्रीय लिपि बनने के समक्ष भी होगी. मुद्रण और कम्प्यूटर पद्धति से देवनागरी लिपि प्रकाशन के उपर्युक्त है जिससे विश्व भाषाओं से इसमें अनुवाद की संभावनाएं बड़ सकती हैं. यही भारत के भिन्न-भिन्न प्रदेशों को एक सूत्रता में पिरोने का काम कर सकती हैं. संसार में हिन्दी भाषा तीसरे नंबर पर है और देवनागरी तीसरे नंबर की राष्ट्रलिपि. इनके जानने वाले चालीस करोड़ से भी अधिक लोग है.

यूरोपिय भाषाओं का शिक्षण देवनागरी लिपि के माध्यम से सरल बन पड़ा है. इसमें विदेशी भाषाओं के शब्दों को सरलता से लिखा जा सकता है. रोमन की अपेक्षा देवनागरी में उच्चारण सुगम है. देवनागरी में सिंहली, इंडोनेशिया, जापानी, रुसी, इतालवी, आधुनिक अरबी, फारसी आदि भाषाएं सीखी जा सकती है और वह पुस्तकें भी बन गई है. अमरीकी अंतरिक्ष संस्था 'नासा' के वैज्ञानिक 'टिम ब्रिग्स' के अनुसार संस्कृत भाषा और पाणिनी का व्याकरण कम्प्यूटर के लिए श्रेष्ठ है. आशुलिपि के आविष्कारक आइजक पिटमेन के अनुसार संसार की कोई लिपि यदि सर्वाधिक पूर्ण है तो वह देवनागरी ही है. यह देश की प्रमुख लिपि रही है. यह समृद्ध और वैज्ञानिक लिपि है. इसमें भारत का समस्त वाङ्मय, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, दर्शन, तंत्रसाहित्य आदि सब कुछ लिखा है. इसका महत्व देश में नहीं अपितु विदेशी विद्वानों मैकडानल, थामस जोन्स, आइजक टेलर तथा जार्ज ग्रियर्सन जैसे लोगों ने आंका है. विश्व के सैकड़ो विश्वविद्यालयों ने हिन्दी भाषा, साहित्य और देवनागरी पर शोध कार्य और अध्ययन मनन हो रहा है यही इसके महत्व को दर्शाता है.

मुद्दा

हिन्दी ही विश्व की सम्पर्क भाषा है

✍ए.कीर्तिवर्द्धन, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

हिन्दी विश्वभाषा बनकर रहेगी और इसका कारण हमारा हिन्दी प्रेम नहीं अपितु वैश्विक बाजारवाद, भारतीय ग्रन्थों में छुपा ज्ञान का अनमोल खजाना, स्वास्थ्य एवं संस्कृति के विषय में जानकारी, लोक-परलोक के विषय में ऋषि-मुनियों द्वारा खोजपूर्ण तथ्यों को तलाशता तथा संग्रहित कर अपनी सभ्यता को विकसित करता पश्चिम जगत होगा. आज विश्व के सभी प्रमुख देशों में विश्वविद्यालयों में हिन्दी व संस्कृत की शिक्षा प्रारम्भ हो चुकी है. अब जब पश्चिम जगत कहेगा कि भारतीय ग्रन्थ, संस्कृति, सभ्यता एवं हिन्दी भाषा श्रेष्ठ है तब मैकाले के काले मानस पुत्र हिन्दी भाषा के सबसे बड़े पैरोकार बनकर छद्‌म प्रमाण पत्र प्राप्त कर हिन्दी के विद्वान बन शीर्ष पर छा जाऐंगें. भारत में आयुर्वेद की दशा चिन्तनीय थी परन्तु वही आयुर्वेद हर्बल बनकर भारत आया तो आज गॉव-देहात तक आयुर्वेद सिर चढ़कर बोलने लगा है. हॉ, दादी मॉ के नुस्खों को मैकाले के पुत्रों ने पेटेन्ट कराकर लूट खसोट का धन्धा अपना लिया. योग से योगा तथा भगवान कृष्ण से कृष्णा बनाकर जब पश्चिम ने प्रस्तुत किया तो हम सब भी इसके रंग में रग लिए.

मेरा यह सब कहने का आशय यह है कि एक लम्बे अन्तराल तक गुलाम रहने की मानसिकता आजादी के साठ वर्ष बाद भी हमारे मस्तिष्क में जड़े जमाए है और नई पीढ़ी को विरासत में सुनहरे सपने दिखाकर दिग्भ्रमित किया जा रहा है. बदलते हुए सामाजिक परिवेश में अंग्रेजी या अन्य कोई भाषा सीखना कोई बुरी बात नहीं परन्तु मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा की कीमत पर नहीं अपितु अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए सीखनी चाहिए. आज भारत के दक्षिणी एवं पूर्वोत्तर राज्यों में भी हिन्दी अपनी जड़े जमा चुकी है. वहॉ अब हिन्दी का विरोध प्रतीकात्मक ही रह गया है. चित्रपट, दूरदर्शन, पर्यटन तथा व्यापारिक हितों ने हिन्दी को विश्वभाषा बना दिया है.

भारतीय संविधान के अन्तर्गत हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है. इसके संवर्धन के लिए संविधान मं प्रावधान है. आवश्यकता है उन प्रावधानों को प्रयोग में लाने की. अगर किसी सरकारी प्रतिष्ठान का नामपट अंग्रेजी भाषा में लिखा है तो संविधान के प्रारुपों के अन्तर्गत यह दण्डनीय है, उसके स्थान पर पहले स्थानीय भाषा, फिर राष्ट्रभाषा एवं तब तीसरे नम्बर पर अंग्रेजी में लिखा जा सकता है. ऐसे संस्थानों को चिन्हित कर पत्र लिखने भर की देरी है, संशोधान हो जाएगा.

हिन्दी की संस्थाओं को आगे बढ़ाकर, अन्य प्रान्तीय भाषाओं को साथ लेकर अहिन्दी भाषी प्रदेशों में सम्मेलन आयोजित करने चाहिए. वहॉ के हिन्दी पाठकों एवं लेखकों की यथासम्भव बढ़ावा देना चाहिए. वहॉ के गॉव-देहात मं निरन्तरता से गोष्ठियां आयोजित की जाएं. हिन्दी के साहित्य का स्थानीय भाषा में तथा स्थानीय साहित्य का हिन्दी में अनुवाद कराया जाए. हिन्दी राष्ट्रभाषा, विश्वभाषा बने, इसका आलाप नहीं, अपितु हिन्दी भाषियों द्वारा हिन्दी का प्रचार-प्रसार किया जाए. विभिन्न भाषा के समानार्थी शब्दों को पर्यायवाची शब्दों में शामिल किया जाए, जैसे नमस्ते के लिए वणक्कम-तमिल, पानी के लिए नीर आदि.

मैं स्वयं तमिलनाडु स्थित उडमलपैठ कस्बे में आयोजित उत्सव में भाग लेने गया. वहॉ पर २००-२५० लोगों से भरे सभागार में बच्चों ने हिन्दी के महत्व पर खुलकर बोला. बच्चों ने बताया कि भारत की राष्ट्रीय भाषा व सम्पर्क भाषा हिन्दी है. उन्होंने यह भी खुलासा किया कि हिन्दी के विरोध के कारण कालान्तर में तमिलनाडु अन्य दक्षिणी राज्यों की तुलना में पिछड़ा है. आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने बच्चों को कहीं भी शिक्षा दिलाएं लेकिन उन्हें अपनी मातृभाषा एवं राष्ट्रभाषा का ज्ञान अवश्य कराएं तथा उस पर गर्व करना भी सिखाएं. परिवार में बातचीत का माध्यम मातृभाषा अथवा राष्ट्रभाषा को ही बनाएं. दक्षिण अथवा पूर्वोत्तर में यदि कही हिन्दी भाषियों का विरोध है तो वह हिन्दी क्षेत्रवासी लोगों द्वारा वहॉ के रोजगार और धन्धों पर कब्जा करने के कारण तथा स्थानीय लोगों के बेरोजगार होने के कारण है. वस्तुतः आज देश में हिन्दी का विरोध नहीं बल्कि हिन्दी के बढ़ते प्रभाव का स्थानीय भाषा एवं संस्कृति पर थोपे जाने का डर है. राजस्थान से व्यापार के लिए गए मारवाड़ियों ने सम्पूर्ण विश्व में हिन्दी के प्रचार-प्रसार में अहम् योगदान दिया है. उन्होंने अपने परिवारों में देश एवं भाषा के प्रेम के बीज पुष्पित-पल्लवित रखे हैं.

हमारे राजनेताओं एवं राजनैतिक दलों का राष्ट्रप्रेम मात्र सत्ता प्राप्ति रह गया है. जब तक हिन्दी भाषी प्रदेशों के सॉसद व विधायक भी हिन्दी के पक्ष में खड़े नहीं होते, प्रदेश स्तर पर भी हिन्दी को बढ़ावा नही देते तब तक हिन्दी के उत्थान की बात कैसे हो? ऐसी विषम परिस्थिति में हिन्दी के विश्वभाषा बनाने के आन्दोलन के साथ-साथ प्रचार प्रसार की अति आवश्यकता है.

कहानी

उत्सर्ग

✍ डा० रामलक्ष्मी शिवहरे, जबलपुर, म.प्र.

रात आधी से अधिक जा चुकी थी. बम्बई की उन सड़को पर जहां शाम से ही चहल-पहल रहती थी उन सड़कों पर अब नीरवता व्याप्त होने लगी थी. कभी-कभी गुजरने वाली गाड़िया इस नीरवता को भंग करती हुई आगे को बढ़ जाती थी. सड़को के किनारे लगे बिजली के खम्भे से लगी दो युवतियां खड़ी थी. कोई गाड़ी आ रही है दूसरी युवती ने धीमे से कहा.

ठीक से पहचानने के बाद ही हाथ दिखाना कहकर पहली युवती ने काला कम्बल दूसरी युवती के हाथ में थमा दिया था.

हेडलाइट के प्रकाश में युवती ने वही चेहरा देखा, जिसकी उन्हें पिछले दो घण्टों से तलाश थी. युवती ने थोड़ा सामने आकर हाथ दिखाया. गाड़ी रुक गई.

मुझे चर्च गेट तक जाना है, यदि आप उधर जा रहें हों तो.... युवती ने गाड़ी के पास जाकर धीमे स्वर में कहा था.

मैं उधर ही जा रहा हूँ बैठ जाइये. पहली युवती की ओर पीछे मुड़कर घूंघट डाली हुई युवती ने जब देखा कि वह उसे ही देख रही थी उसके चेहरे पर निश्चिंतता के भाव थे.

उसी क्षण पीछे का दरवाजा खुला और युवती कम्बल को गोद में संभालती हुई बैठ गई थी.

चर्चगेट के पास भी कोलाहल नहीं था. तभी कोई ट्रेन रूकी थी और एक भीड़ का रेला स्टेशन से निकला था. मुझे यहीं उतार दीजिये युवती ने शीघ्रता से कहा था.

भास्कर की गाड़ी के पहिये जोर से ब्रेक लगाने से चरमरा उठे थे. युवती ने कम्बल को सीट पर रखा और भीड़ में मिल गई.

कैसी थी यह युवती भास्कर ने सोचा. रात के इस अंधेरे मे कहां से आ रही थी. बम्बई के आधुनिकता से भरे वातावरण से परे हाथ भर का लम्बा घूंघट, धन्वाद का एक शब्द भी नहीं. उसने कंधे उचकाये और गाड़ी शुरू करने की सोची ही थी कि उसे लगा गाड़ी में कहीं कुछ गड़बड़ है. उसने पीछे की सीट पर दृष्टि डाली जहां कंबल में कुछ हिल रहा था.

क्या युवती गाड़ी में कुछ छोड़ गई है. भूल से या जानबूझकर. वह शीघ्रता से उतरा अभी ज्यादा दूर नहीं गई होगी पर उसे खोजना इतना आसान नहीं था. ट्रेन से उतरी भीड़ की रेलपेल में युवती कब का गुम हो चुकी थी. उसने माथे पर चुहचुहाये पसीने को पोंछा उसने कार से टिककर कुछ क्षण उस युवती की प्रतीक्षा की, शायद युवती अपनी छोड़ी हुई वस्तु वापस लेने आ जाए. क्षण बीतते जा रहे थे....क्या है उस कंबल में? मात्र कंबल ही हो तो उसे पुलिस स्टेशन में जमा कर देगा. अब और प्रतीक्षा व्यर्थ है जानकर वह गाड़ी में बैठा और गाड़ी आगे बढ़ा दी.

कुछ दूर जाने के बाद उसे पहले सी नीरवता मिली तो उसने गाड़ी किनारे लगा दी, गाड़ी के हेड लाइट्स बंद किये और अंदर की लाइट चालू की तो देखा कंबल मात्र कंबल नही था उसके भीतर कुछ लिपटा हुआ था. उसने कंबल हटाया तो चौक पड़ा, कुछ ही दिनों का जन्मा शिशु था. बारीक से ओंठ, लाल रंग, बारीक सी दो लकीरें भवों के स्थान पर, सर पर थोड़े से बाल, नाक चपटी सी. शिशु को देखकर भास्कर परेशान हो गया. इस बालक का वह क्या करें उसकी समझ मे नही आ रहा था. उसे अपने ऊपर झल्लाहट हो आई. उसने युवती को लिफ्ट दी ही क्यों? एक तो प्रयोगशाला में दिन भर काम करके वह इतना थक गया था कि इस नयी चिंता में वह घिरना नहीं चाहता था. उसने सोचा इसे पुलिस में जमा कराने जाएगा तो पुलिस हजारों प्रश्न पूछकर उसे परेशान करेगी, इसे वह यहीं छोड़ दे तो उसने कंबल पूरा खोला, देखा एक कागज है इसमें क्या लिखा हो सकता है उसने कागज उठाया और उस पूर्जे को खोलकर पढ़ने लगा.

मिस्टर भास्कर

चौक गये न अपना नाम पढ़कर, आप मुझे नहीं जानते लेकिन मैं आपको जानती हूँ. यह कहना अधिक उचित होगा कि जानती हीं नहीं पहचाती भी हूँ. इतना बड़ा वैज्ञानिक जिसने अपनी पहचान पूरी दुनिया में बनाई हो उसे मैं जानूं उसमें आश्चर्य भी तो नहीं. भास्कर महोदय, आज की रात आप पर जो बीत रही है उसे मैं भली प्रकार समझ रही हूँ परंतु मैं क्या करूं चिंता थी. जन्म देने में ही इतनी कठिनाईयां आई कि उसे पालना चाहकर भी आपको सौंपना पड़ रहा है. आप सोचें मैं आप ही को क्यों यह दायित्व सौंप रही हूँ तो सुनिये क्योंकि इसके पिता आप ही है. भास्कर चौक गया...वह और पिता ऐसे कैसे विश्वास कर ले कि यह उसका ही बच्चा है उसने एक दृष्टि उस बच्चे पर डाली और पत्र पढ़ने लगा.

शायद आप यह सोच रहे होंगे कि मैं आप पर किसी अन्य का बच्चा थोंप रही हूँ पर ऐसी बात नहीं है. नारी पुरुष की बहुत बड़ी कमजोरी रही है. प्रकृति से आप भी अछूत नहीं थे कभी जब आपमें ऐसी भूख जागृत होती थी आप इधर-उधर जाकर अपनी भूख

मिटा लिया करते थे. इस बात का हमें कैसे पता लगा आप यह सोच रहे होंगे. मैं भी कोई ऐसी-वैसी लड़की ही हूं तभी तो मुझे आपके बारे में सब पता है. मैं एक प्रतिष्ठित संपन्न परिवार की लड़की हूँ. मैंने एम.एस.सी ज्युलॉजी में पास की है और आत्मनिर्भर हूं. मैं अपनी सहेली के पास बम्बई आई हुई थी. एक दिन एक होटल में बैठी हुई शीतल पेय पी रही थी कि तभी आपने प्रवेश किया चेहरे से आप काफी थके हुए लग रहे थे.

जानती है कौन है? ज्योति ने कोने की मेज की ओर बढ़ते देखकर मुझसे कहा था. मेरी गर्दन नकारात्मक ढंग से हिल गई थी. ये हैं देश के महान वैज्ञानिक मिस्ट भास्कर.. लगता है सीधे प्रयोगशाला से आ रहे हैं. जब अपनी प्रयोगशाला में जाते हैं इन्हें समय का ज्ञान नहीं रहता. इनका खाना-पीना सब प्रयोगशाला में ही होता है. मैंने पूछा-इनकी पत्नी इन्हे कुछ नहीं कहती. अच्छा है कि इन्होंने विवाह ही नहीं किया. ज्योती बोली थी. इसे तू अच्छा कह रही है ज्योति. आश्चर्य है. अरे तुमने विज्ञान लिया होता तो जानती इनका विवाह न करना देश के लिए कितना हानिप्रद है.

तू क्या कह रही है? मैं नहीं समझी. इसमें क्या हानि हो सकती है देश को. इतना परिष्कृत दिमाग इनके साथ ही समाप्त हो जाएगा. यदि इनका बच्चा होता तो निश्चित रूप से उसका दिमाग भी ऐसी ही नई-नई खोजों में प्रवृत होता.

क्या कहती है रमोला तू. क्या ऐसा भी हो सकता है.

ऐसा हमने पढ़ा है.

मेरी बात सुनकर ज्योति कुछ पलों के लिए खामोश हो गई थी. फिर कहा था- तुझे तो एडवेंचर प्रिय है तू अपने को इस कार्य के लिए क्यों नहीं तैयार करती.

क्या कह रही है तू जानती भी है, मैं एक जाने माने परिवार की लड़की किसी को पता चल गया तो.

मेरी शादी न हो गयी होती तो मैं इस कार्य के लिए तुझसे नहीं कहती. अपने देश के भविष्य के लिए यह उत्सर्ग स्वयं करती. जहां तक किसी को पता चलने का प्रश्न है तू निश्चित रह किसी को कुछ पता नहीं चलेगा. सब मैं संभाल लूंगी.

ज्योति की बातों ने मुझे उत्तेजित कर दिया था मुझे निर्णय लेने में क्षण भी नहीं लगा था. मैंने अपने को इस प्रयोग के लिए तैयार कर लिया था कि विलक्षण बुद्धिवालों के बच्चे भी विलक्षण बुद्धि के होते हैं.

इसके बाद शुरू हुई थी आपकी जासूसी और ऐसे ही एक दिन आपको जब किसी की तलाश थी मैंने आपके समक्ष अपने आपको समर्पित किया था.

लेकिन इसके बाद मुझे आश्चर्यजनक परिवर्तन हुये थे. मैं अपने आपको आपकी विवाहिता समझने लगी थी और मैंने कभी विवाह न करने का निर्णय ले लिया था. इस बालक को जन्म देने के बाद उसे अपना बच्चा कहकर पालने की हिम्मत नहीं जुटा पा रही हूँ. पर मुझे विश्वास है कि आप इस बालक की परिवरिश अपना नाम देकर ही करेंगें. हो सकता है कभी ऐसे इसे वापस लेने आ जाऊँ इसे संभाल कर रखिएगा.

आपकी

रमोला.

भास्कर पत्र पढ़कर चकित रह गया. क्या ऐसी भी कोई लड़की हो सकती है जो अनोखें प्रयोग के लिए अपना पूरा जीवन ही दांव पर लगा दें. तभी वह बालक रोने लगा. अब इसका क्या करूं अभी तो समस्या इस बालक को लेकर थी, तभी उसे याद आया अंधेरी में उसकी दूर की भाभी है जो पति की मृत्यु के उपरांत अकेली रहती है, परंतु उनसे कहेगा क्या कुछ तो कहना ही होगा. उसने एक दृष्टि रोते हुए बच्चे पर डाली और गाड़ी शुरू कर दी.

भास्कर जब अंधेरी पहुंचा रात्रि का तीसरा पहर चल रहा था. उसने आहिस्ते से दरवाजा खटखटाया उसे मालूम था भाभी रात में कॉल बेल बंद करके सोती थी. थोड़ी देर के बाद कमरे में रोशनी हुई फिर दरवाजा खुला. भाभी ने कहा-अरे भास्कर, तुम इतनी रात गये...तुम्होर हाथ में यह क्या है?

प्रयोगशाला से घर जा रहा था कि रास्तें में एक बालक पड़ा मिला.

बच्चा! तूने इसे उठाया क्यों भास्कर? बम्बई मे तो रोज ही इस तरह की घटनायें घटती है. तू क्यों लफड़े में पड़ता है जहां मिला था उसे वहीं छोड़ आ.

भाभी इसे मैं पालना चाहता हूं. कहते हुए भास्कर अंदर आ गया.

तू बच्चा पालना चाहता है? क्या कह रहा है? शादी तो की नहीं, नहीं तो तेरे अपने बच्चे कितने बड़े होते. भास्कर के पीछे-पीछे भाभी भी अंदर आ गई थी. भाभी बहुत देर तक प्रकाश की रोशनी में बच्चे को निहारती रह गई थी. उन्हें भास्कर की गोद में बच्चा प्यारा सा लगा.

तूने मन में ठान लिया है तो इसे पालना ही पड़ेगा, ला इसे मुझे दे कहकर उन्होंने बच्चा भास्कर की गोद से लेकर पलंग पर लिटा दिया था ओर कहा था-लगता है किसी बड़े घर का है.

भास्कर चुप रहा था. भाभी से कहता भी क्या, चिट्ठी अभी भी उसकी जेब में थी.

भाभी यह कुछ रुपये रख लो इसे किसी चीज की कमी नहीं होनी चाहिये. उसने पर्स से सौ-सौ के दस नोट निकालकर भाभी को दिये थे.

इसकी क्या आवश्यकता है इसका खर्च तो मैं भी उठा सकती हूँ.
वह तो मैं भी जानता हूँ भाभी पर यह रख लीजिए कहकर जबरदस्ती उसने वे नोट भाभी के हाथ मे पकड़ा दिये थे.
चाय बनाऊँ? बैठा.
नहीं आप सो जायें, मैंने असमय ही आपको तकलीफ दी. अब मैं चलता हूँ. कहकर उसने एक दृष्टि पलंग पर सोये बच्चे पर डाली थी और अपने फ्लैट में आकर सो गया था.
इसके बाद भास्कर कभी-कभी भाभी के पास आकर बच्चे को देख आता. उसने उसका नाम कर्ण रखा था. पिता के स्थान पर उसने बच्चे को अपना नाम दिया था. जैसे-जैसे कर्ण बड़ा होता जा रहा था, उसकी प्रतिभा प्रकट होने लगी थी. कभी-कभी उसकी विलक्षण बुद्धि को देखकर वह भी चकरा जाता था. कर्ण का परिचय बिला बोले ही भाभी पाने लगी थी. कर्ण को देखकर ऐसा लगता था जैसे छोटा भास्कर ही हो. भास्कर उसे अपनी प्रयोगशाला मे ले जाता था, कर्ण खामोश उसे काम करते देखता रहता था. उसकी आकांक्षा भास्कर सा ही वैज्ञानिक बनने की थी. इस समय भास्कर ऐसे युद्धपोत का पता लगा सके और उन पर मार कर सके. कर्ण जब इंजीनियरिंग की परीक्षा पास की तो भास्कर ने उसे उच्च शिक्षा के लिए अमेरिका भेज दिया.
इस समय भास्कर लॉबी में बैठा हुआ कर्ण के प्लेन की प्रतीक्षा कर रहा था. दो वर्षो की शिक्षा की शिक्षा समाप्त कर वह स्वदेश आ रहा था. उसी के समान एक प्रौढ़ महिला भी बैठी हुई प्लेन की प्रतीक्षा कर रही थी.
तभी प्लेन के आने की घोषणा हुई. वह लॉबी से बाहर आया और जहाज को हवाई पट्टी पर उतरते देखता रहा. जहाज के रूकते ही सीढ़ी लगा दी गई. यात्री उतरने लगे थे. उन्हीं में था कर्ण. अचानक उसकी दृष्टि पास खड़ी प्रौढ़ महिला पर पड़ी जो अपनी भर आई आंखों को पोंछ रही थी.
आपको जिसकी प्रतीक्षा थी शायद आया नहीं.... भास्कर के स्वर में सहानुभूति थी.
आया क्यों नहीं. यह आंसू तो खुशी के हैं. पुत्र के स्वदेश आगमन पर आपको बधाई हो.
भास्कर चकित था यह कौन है? जिसे वह जानता भी नहीं उसे बधाई दे रही थी. वह उससे कुछ पूछता की तभी कर्ण उसके पास आ खड़ा हुआ था और वह उसमें व्यस्त हो गया था. भास्कर जब कर्ण के साथ बाहर निकला उसने आसपास उस महिला को खोजने का प्रयत्न किया पर वह महिला जा चुकी थी.
इसके बाद भास्कर की प्रयोगशाला में ही कर्ण की नियुक्ति हो गई थी. कर्ण में काम करने की अनूठी लगन थी. जहां भास्कर कुछ ही घण्टों में थकावट अनुभव करने लगता, कर्ण लंबी अवधि तक प्रयोगों में जुटा रहता. इस समय वह चन्द्रयान बनाने में लगा हुआ था यदि वह इसमें सफल हो जाता है तो संसार के उच्चकोटि के वैज्ञानिकों में उसकी गिनती होने लगेगी और वह दिन भी आया जब वह चन्द्रयान बनाने में सफल हो गया. सरकार ने उसे नियत समय पर छोड़ने की अनुमति भी दे दी. जैसे-जैसे उसे छोड़ने का समय पास आता गया कर्ण की चिंता बढ़ती गई. भास्कर उसकी इस चिंता से परिचित था. उसने उसे दिलाता देते हुए कहा भी था-वैज्ञानिक प्रयोग करता है, कभी उसमें सफल होता है और कभी असफल. सच्चा वैज्ञानिक तो वही होता है जो असफलता पर निराश नहीं होता वरन् नये सिरे से फिर निर्माण में जुट जाता है.
वह दिन भी आया जब चन्द्रयान छोड़ा जाना था. काफी प्रतिष्ठित लोग जमा थे. प्रयोगशाला में केवल भास्कर और कर्ण थे. कर्ण के बटन दबाते ही यान ऊपर और ऊपर उठता चला गया और आंखो से ओझल हो गया परंतु सांस थामे कर्ण उसे टी.वी. पर ऊँचा उठते देखता रहा. घण्टों बीत गये. प्रयोगशाला के बाहर निरंतर भीड़ बढ़ती जा रही थी. लोग परिणाम जानने के लिए उत्सुक थे. ऊँचे उठते यान को देखकर भास्कर ने कहा उसका प्रयोग सफल रहा. किसका पापा....आप किसकी बात कर रहे हैं अभी यान चन्द्रमा पर उतरा नहीं है. तुम्हारें प्रयोग की बात नहीं कर रहा हूँ बेटे. तुम्हार मॉ के प्रयोग की बात कर रहा हूँ. बहुत दिनों से तुमसे एक बात कहने की सोच रहा था. भास्कर ने जेब से निकाल कर वह वर्षो पुराना पत्र कर्ण को दे दिया. जैसे-जैसे कर्ण पत्र पढ़ता गया वह अपने जन्म की विचित्र गाथा से परिचित होता गया. कौन होगी वह देवी जिसने उसे जन्म दिया. वह कुछ क्षणों के लिए उस यान को भी भूल गया जो सफलतापूर्वक चन्द्रमा की परिक्रमा कर रहा था. अब कुछ ही देर में यान चन्द्रमा पर उतरने वाला है भास्कर ने कहा तो कर्ण चौक पड़ा.
उसने कहा-पापा कभी वे मिलेंगी तो मुझे उनसे मिलवायेंगें न?
तुम्हारी इतनी बड़ी सफलता उन्हें यहां अवश्य खींच लायेगी. तुम्हें चौकन्ना रहना होगा. यदि यह चन्द्रयान सफलतापूर्वक चन्द्रमा पर उतर गया तो अगले यान में हम मानव भेज सकेंगे. कर्ण ने कहा.
और उस पर तुम जाना चाहोगें? भास्कर ने उसे गहरी दृष्टि से देखा. हॉ पापा आखिर इसमे बुराई क्या है? बुराई कुछ नहीं पर उससे पहले तुम्हें विवाह करना होगा. तुम देख रहे हो

अपने देश को अच्छे वैज्ञानिकों की कितनी अधिक आवश्यकता है.

पापा यान चन्द्रमा पर उतर रहा है. कर्ण की सांस तक थमी हुई थी और यान चन्द्रमा पर उतर रहा था. उतरने के बाद जब उसने पहला फोटो वहां से प्रेषित किया तो वह खुशी से झूठ उठा. आप जैसा कहेंगे वैसा ही होगा कहकर वह भास्कर के गले लग गया था.

आओ हम सफलता की सूचना अपने देशवासियों को भी दे दें. कहकर भास्कर कर्ण को लेकर बाहर आया. जैसे ही भास्कर ने सूचना दी हर्षनाद से गगन गूंज उठा. प्रेस रिर्पोटर के कैमरे कर्ण की फोटो पर फोटो खींच रहे थे. कर्ण उन सब में घिर सा गया था. भास्कर एक जगह सबसे अलग खड़ा था, पता नहीं क्यों उसे इस समय रमोला की याद आ रही थी. तभी उसने उसे लगा कोई अन्य भी उसके पास खड़ा हुआ है देखा तो एक प्रौढ़ सी महिला उसके पास खड़ी थी. भास्कर को लगा उन्हें पहले भी कहीं देखा है कहां? वह सोचता रहा. उसे याद आया हवाई अड्डे पर इसी महिला ने उन्हें बधाई दी थी. अचानक उसने कहा-आप रमोला? उसने उसे वाक्य पूरा नहीं करने दिया और कहा-तो आप मुझे पहचान ही गये.

भास्कर खुशी से झूठ उठा....रमोलाजी कर्ण आपसे मिलना चाहता है.

जानती हूं, पर मैं उससे नहीं मिल सकती. रमोला की आंखें लोगों से घिरे कर्ण पर ही थी.

क्यों? आपने तो लिखा था आप उसे कभी भी लेने आ सकती है. हम दोनों कब से आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं.

जब मैंने लिखा था तब मैं स्वतंत्र थी किंतु अपनी मॉ की खुशी के लिए मुझे विवाह के बंधन मे बंधना पड़ा पर जीवन तभी कर्ण की दृष्टि भास्कर पर पड़ी और वह समझ गया कि उसके पास कौन खड़ा है. वह भीड़ से निकलकर भास्कर की ओर आने लगा. उसे अपनी ओर आते देखकर रमोला ने कहा-वह इधर की आ रहा है. उसे मेरी ओर से बधाई दे दीजिएगा.

क्या आज जब इतनी खुशी का अवसर है दूसरे लोग बधाई दे रहे हैं यह बध ाई तुम स्वयं नहीं देना चाहोगी.

जो हम चाहते हैं वह हर चीज तो हमें नही मिल जाती भास्कर महोदय. अब मैं जा रही हूँ कहकर रमोला द्रूत गति से एक ओर चली गई थी. उसी समय कर्ण भास्कर के पास पहुँचा-पापा क्या वे ही....?

भास्कर ने धीरे से हॉ में गर्दन हिला दी थी.

आपने उन्हें रोका क्यों नहीं, कम से कम उनके चरण तो छू लेता....कर्ण भावुक होने लगा था.

बेटा अच्छी आत्मायें उत्सर्ग करके इसी तरह उसमें निर्लिप्त रहती है. आओं देखें यान ने कितने फोटोग्राफ्स और भेजे हैं.

अब आज नहीं पापा मैं घर जा रहा हूँ, कुछ देर मैं अकेला रहना चाहता हूँ, कहकर वह अपनी कार की ओर बढ़ गया था.

भास्कर जानता था कर्ण अंधेरी जा रहा है.वह अभी भी भाभी के फ्लैट में ही रहता था. जबकि भाभी बहुत पहले ही इस संसार से विदा हो गई थी पर उन्होंने अपना सब कुछ कर्ण के नाम कर दिया था. वह कर्ण को सांत्वना देना चाहता था पर जानता था इससे कर्ण को दुख ही होगा और भास्कर स्वयं थके कदमों से अपनी कार की ओर बढ़ गया था.

कितनी भोली हो तुम?

✍ **विनय कुमार 'विधु',** कवर्धा, छ.ग.

सजनी! कितनी भोली हो तुम? देख रही वहाँ, किसे गुमसुम?
आ! इधर, जूड़े में लगा दूँ, लावण्यमय-गुलाब का कुसुम।। सजनी।।

अरुण-पुष्प, केश-व्यूह-अन्त; प्रतीत, बालारूण-स्वतः।
मॉग की, सिन्दूर-रेखा लगे; विहॅसता, आ रहा हो प्रातः।।
रंगीत-सितारे, बिन्दी-कुमकुमां सजनी.......

तुम्हारी; दामिनी-सी मुस्कान; उठाये; अन्तस में ऑधी-तूफान।
इंदीवर-अक्षि के, आव्हान में; मेरा सब कुछ है-बलिदान।।
नयनों में नाचे; छवि छुम-छुम।। सजनी........

बदन की आभा; दाहक अग्नि; शमित-श्वसन, मधुर-निर्झरिणी।
कपाल पर, परिश्रम की बूँदे; नीलम-नभ के, चन्द्र-चॉदनी।।
मयंक-मुख, सुमृदुल-मासूम। सजनी.........

अधर-मेल, द्वय-विधु-प्रांजल; वाणी, वाग्देवि-वीणा-विमल।
घन कुन्तल, अमावस-यामिनी; कर्णो में, कौमुदी के कुण्डल।।
दन्त-मौक्तिक, शम्पा-अंजुम।। सजनी.......

गले में चमे, हीरक-हार, लाजवंती-पलकें, प्रीति-द्वार।
बाहें, जन्म-जन्म का बंधन; अन्तः-अन्तर्हित, अनुपम-प्यार।।
आ! तुझको, एक बार लूँ-चूम. सजनी...............

व्यक्तित्व

साहित्य जगत का एक 'अखिल': अखिलेश निगम

५ अगस्त १९६६ को हसनपुर खेवली, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में श्री बैजनाथ निगम के घर में श्रीमती शकुन्तला निगम के मातृत्व में जन्में श्री अखिलेश निगम 'अखिल' अब साहित्य जगत में अपना एक अलग मुकाम बना रहे हैं. एम.काम., आई.सी.डब्ल्यू.ए, एम.ए. हिन्दी, एल.एल.बी की शिक्षा ग्रहण कर चुके श्री अखिल साहित्य सृजन, खेल-कूद, योग एवं अध्यात्म, बागवानी, ज्योतिष, पर्यटन आदि में विशेष अभिरुचि रखते हैं. मुख्यतः गीत, छन्द, गज़ल, दोहा, नई कविता, हास्य-व्यंग्य लेख, लघु कथा, कहानी, समीक्षा एवं सस्मरण के लिखने वाले अखिल जी का विवाह श्रीमती नीता निगम से हुआ.

अखिल जी की अभिलाषा, उत्तर देगा कौन? दो प्रकाशित कृतिया हैं. दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से निरन्तर प्रसारित होती रहती है, देश की विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में पढ़ने को अक्सर मिल ही जाती है. पुलिस विभाग में अपर पुलिस अधीक्षक जैसे जिम्मेदार व समयाभाव रखने वाले पद पर आसीन रहते हुए भी अक्सर साहित्यिक आयोजनों में अपनी सक्रिय सहभागिता निभाते रहते हैं. कभी अतिथि के रुप में तो कभी श्रोता के रुप में.

अखिल जी की साहित्यिक सेवाओं को देखते हुए ही देश की नामी गिरामी संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया है. इनमें शिव मंगल सिंह सम्मान (पूर्व प्रधानमंत्री स्व. चन्द्रशेखर द्वारा),साहित्य श्री समान, राजेश्वरी प्रकाशन, गूना, म.प्र., साहित्य भूषण सम्मान, जागृति प्रकाशन, मुंबई, भगवती चरण वर्मा सम्मान, अखिल भारतीय अगीत परिषद, लखनऊ, रामधारी सिंह दिनकर सम्मान, नगर निगम डिग्री कॉलेज, लखनऊ, काव्य कुमुद अलंकरण, द अनन्त शक्ति टाईम्स, उत्तराचंल, देवभूमि गद्य साहित्य सम्मान, नागार्जुन सम्मान, पूरब-पश्चिम काव्य गौरव सम्मान, मानसरोवर साहित्य शिखर सम्मान, मानव काव्य रत्न, हिन्दी साहित्य ध्रुव, उत्तर प्रदेश साहित्य गौरव, साहसिक पर्वतारोहण सम्मान, स्वर्ण जयन्ती सृजनधर्मी सम्मान, हरि ठाकुर स्मृति सम्मान, वैचारिक क्रान्ति सम्मान, मोती.बी.ए. सम्मान सहित कई दर्जन सम्मानों व उपाधियों से मानिद किया जा चुका है. मृदुल स्वभाव के धनी, मिलनसार श्री अखिल जी से जब भी वार्ता होती है देश की हिन्दी की दशा व दिशा पर ही वार्ता होती है. यह साहित्यियक चर्चा कभी भी आधें/एक घंटे से कम नहीं होती. आपके मन में प्रशासनिक सेवा में रहते हुए भी हिन्दी भाषा के प्रति अपार स्नेह व लगन है.

✍शिवेन्द्र त्रिपाठी 'समीर',प्रतापगढ, उ०प्र०की कविता

रोता हिन्दुस्तान है

उठों कलम के ऐ रणवीरों,
गूंज रहा तूफान है।
लोकतंत्र चिता जल रही,
रोता हिन्दुस्तान है।।

भारत मॉ के चीर हरण को,
आज दुशाःसन डोल रहे है।
भाई-भाई के रिश्ते में,
कटुता का विष घोल रहे है।
कुर्सी बनी अराध्य सुन्दरी,
कैसा बना विधान है।1।।

आज सियासत की गलियों में,
खेल रहे सब खून की होली।
मॉ का आंचल सूना करते,
लूट रहे बहनों की डोली।
डगर-डगर आतंक मचा
बैठे विषधर फनतान है।२।।

आज वतन बदनाम हो रहा,
सब कुछ ईमान नहीं है।
हिन्दू-मुसलमां दोनों है देखें,
दिखता कहीं इंसान नहीं है।
इंसान बना शैतान आज,
खुद देख खुदा हैरान है।।३।।

गली-गली नीलामी होती,
जिसमें अल्ला-राम बिक रहे।
सत्ता की अंधियारी गली में,
कितने कफन बेनाम बिक रहे।
कफन के हर धागे में बाइबिल,
गीता और कुरान है।।४।।

दुखियारें के नयन नीर से,
खारा हो गया सागर पानी।
गीता का संदेश सुनाने,
सागर मचला बन तूफानी।
चहुँ दिशि हाहा कार मचा है,
मचा हुआ कोहराम है।।५।।

लाशों के सौदे होते है,
अस्मत के बाजार खुले है।
बात करूं क्या पांचाली के,
यहॉ बहुत से केश खुले है।
मर्यादा सड़को पे लुटते,
देख रहा भगवान है।।६।।

लोकतंत्र की चिता जल रही,
रोता हिन्दुस्तान है।।

++++++++++++++++

मुद्दा

जो खाते थे पहले मुर्ग–मुसल्लम, वो अब शाकाहारी का गुण गा रहे हैं

अरे! भाई इस मंहगाई में कुछ न पूछो, जिधर देखो उधर ही ब्रम्हचारी नजर आ रहे है

✍ **महेन्द्र कुमार अग्रवाल,** इलाहाबाद

किसी भी देश की अर्थव्यवस्था एवम् उसके विकास के मूल कारक मॉग एवं पूर्ति अपना एक विशिष्ट स्थान रखते है. इन दोनों कारकों में आपस में इतना गहरा संबंध है कि किसी एक के भी करवट लेने मात्र से दूसरे पर एकदम विपरीत प्रतिक्रिया देखने को मिलती है. यदि यह कहा जाय कि ये ऐसे जुड़वा बच्चे है जिसमें यदि एक रोता है तो दूसरा हॅसता नजर आयेगा. (जो जुड़वा बच्चों में प्रायः देखने सुनने में नहीं मिलता हैं.) तो अतिश्योक्ति नहीं होगी. कुछ इसी तरह की स्थितियों से आज कल हमारा देश भारतवर्ष भी ग्रसित नजर आ रहा है. सुरसा के मुॅह की तरह बढ़ती ही जा रही मंहगाई (मॉग) के प्रत्युत्तर में एक दम लघुरुप होकर निकलते हनुमान जी (पूर्ति) को देखकर मॅहगाई रुपी सुरसा ने मानो हनुमान रुपी पूर्ति को सदैव इसी तरह बने रहने का आशीर्वाद ही दे दिया हो. जिससे सुरसामाई को अपना मुॅह बायें ही रहे. फलस्वरुप आज के हालात ऐसे हो चले हैं कि अच्छा से अच्छा धनवान जो रोज मीट, मछली, अंडा, मुर्ग मुसल्लम के बिना खाना नहीं खाता था अब पहुॅच से बाहर होने पर शाकाहारी की बात करने लगा है. यह अलग बात है कि उसे शायद यह पता नहीं कि अब शाकाहारी बनना या शाकाहारी की बात करना भी बेईमानी ही होगी. क्योंकि इस समय आटा, चावल, दाल, घी, तेल, सब्जियॉ एवं मेवे व फल इतने अधिक मॅहगे हो गये है कि अब शायद मॉसाहारी को भी मात दे रहे है. सर्वविदित है कि इस बढ़ती ही जा रही मॅहगाई के अनेकों कारणों (जिसमें भारत सरकार एवम् प्रदेश सरकार भी कम दोषी नहीं है.) में मुख्य कारण लगभग विस्फोटक होती जा रही जनसंख्या यानी मॉग की अपेक्षा उसे प्राप्त होने वाली खाद्य, अखाद्य पदार्थ, जीव जन्तु पेड़ पौधे, वनस्पति इत्यादि की लगभग न के बराबर या यूॅ कहा जाय कि 'ऊँट के मुंह में जीरा' की पूर्ति ही है. इस विषम स्थिति के कारण असंख्य लोग प्रतिदिन कुपोषण, एनेमिक, विभिन्न असाध्य एवम जानलेवा बीमारियों के जबड़े में जकड़ कर कालकलवित को ग्रसित होते जा रहे हे. फिर भी हम मूकदर्शक, असहाय से होकर सब कुछ सहने के आदी हो चले है. यानि खाना-पानी तो छोड़ देने पर राजी ही हैं. यहॉ तक कि इससे पड़ने वाले प्रभाव से असक्त होकर या यूॅ कहे कि जेब में माल का दिन प्रतिदिन खलास होते जाने से अपना व अपने परिवार को मुर्ग मुसल्लम का दर्शन करा पाने में असमर्थ तो हो ही रहा है. शाकाहारी बनना भी बस से बाहर होता जा रहा है. आश्चर्य किन्तु दूरदर्शिता की दाद देनी होगी कि कि अब अधिकांश शिक्षित ही क्या अनपढ़ गंवार गरीब से गरीब एवम् मजदूर ही क्या बड़े बड़े धन्ना सेठों को भी अब परिवार नियोजन भाने लगा है. उचित तो यह होगा यदि यह कहा जाय कि आने वाले समय में कहीं भीख न मॉगने की नौबत आ जाय, ऐसा सोचकर ही शायद सन्तान उत्पत्ति न करके ब्रम्हचारी का सुख भोगने का दिवास्वप्न देखने लगा है. देखा जाय तो मुॅहमॉगा वरदान साबित होता जा रहा है. क्योंकि न ज्यादा आबादी बढ़ेगी न सरकार को उस हिसाब से शिक्षा, दीक्षा, निवास, रोजगार, स्वास्थ्य इत्यादि मुहैया कराने के लिए पापड़ बेलने पड़ेगें. न अब जनसंख्या नियंत्रण के लिए कोई प्रचार प्रसार या प्रलोभन इत्यादि की जरुरत ही पड़ेगी. सच ही कहा है न मर्ज रहे न मरीज. मॅहगाई तो अपने आप औंधे मुॅह गिर कर मरेगी.

सरकार बहादुर जरा ठंडे दिमाग से सोचिए. क्या इन हालातों के लिये जितनी हमारी सरकार दोषी है उससे ज्यादा क्या हम आप सभी कम दोषी है क्या? जितनी चादर नहीं उससे ज्यादा लम्बे पैर फैला लिये गये है. एक आदमी का खर्च बहन नहीं कर पा रहे है, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान के युद्ध के खातिर फौज पर फौज पैदा करते जा रहे हैं तो फिर मॅहगाई को ही क्यों कोसते हो. अपने गिरेबान में भी झॉक कर देखो जरा. अरे गनीमत है कि अभी कि आप ब्रम्हचारी बरने की सोच रहे हैं. अभी प्रकृति ने अपना तांडव नृत्य नहीं दिखाया. लेकिन अगर इसी तरह हम पैदावार संतानोत्पत्ति करते रहे एवं उसकी पूर्ति, शिक्षा, स्वास्थ्य, निवास नाकाम रहे तो वो दिन दूर नहीं जब हमारी अपनी संतान ही हमें नक्कारा कहेगी.

देश के प्रत्येक कोने कोने से वृक्ष, पेड़ पौधे जो हमें खाद्य पदार्थ जैसे अनेकों आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है, को काट-काट कर बड़े-बड़े आलीशान, महल, फैक्टरियां उद्योग ध न्धे स्थापित करते जा रहे है. वायुमंडल को आक्सीजन देकर वहॉ की कार्बनडाई

आक्साईड को खाने वाले वृक्ष, पेड़ पौधे जब नहीं रहेंगे तो सॉस लेने के लिए आवश्यक आक्सीजन क्या हमारे पूर्वज हमें देंगें. जरा सोचिए. अभी भी वक्त है कि हम अपनी आंखे खोलकर शाकाहारी एवम् ब्रम्हचारी बनने का ढोग छोड़कर प्रकृति को समझे. उसका सम्मान करें. उसके बनायें नियमों कानूनों का पालन करें. वरना एक न एक दिन मॅहगाई रुपी सुरसा का घमंड से दो चार हुए हनुमान जी के ईश श्री रामचन्द्र जी यानि ऊपरवाला यानि प्रकृति ऐसे सबक सिखायेगी कि फिर न रहेगी बॉस न बजेगी बांसुरी. अन्त में लिखते-लिखते ज्ञात हुआ कि माननीय न्यायाधीश जी ने समलैंगिग विवाह की आज्ञा प्रदान करके सरकार एवम आम जनता को आबादी नियंत्रण का अचूक उपाय प्रदान कर दिया है. अब क्या है दोनों हाथ में लड्डू न मॉग बढ़ेगी और न पूर्ति बढ़ाना पड़ेगा. मंहगाई गई भाड़ में.

डॉ. यायावर सम्मानित

फिरोजाबाद, उत्तर प्रदेश के साहित्यकार डॉ० राससनेही लाल शर्मा 'यायावर' को स्व. बाबू नूनू सिंह स्मृति देव साहित्य एवं संस्कृति परिषद द्वारा समस्तीपुर, बिहार में प्रदान किया गया. सम्मान में पगड़ी, उत्तरीय, स्मृति चिन्ह, कलम डायरी, आर्ष साहित्य, २५०१ रुपये नगद राशि एवं तलवार प्रदान की गई. इस अवसर पर केदारनाथ कन्त, आलोक भारती, डॉ. रवीन्द्र राकेश, को भी सम्मानित किया गया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता आर.वी.एस. कॉलेज, समस्तीपुर के पूर्व प्राचार्य डॉ० गौतम द्विवेदी, संचालन संस्था के महासचिव डॉ० अर्जुन प्रसाद सिंह ने तथा उदघाटन प्रफुलकुमार सिंह 'मौन' ने किया.

ग़ज़ल

दर्द दिल में मेरे उठे फिर से
मिल गया ज़ख़्म लो नया फिर से
ख़्वाब में आज तुमको देखा है
काम आ ही गई हुआ फिर से
है रवॉ प्यार मेरी रग-रग में
हिज़्र की रात चॉद जो निकला
याद आया वो बेवफ़ा फिर से
ज़िन्दगी धूप छॉव का मौसम
फूल दिल का खिले 'उषा' फिर से।

उषा यादव 'उषा', इलाहाबाद, उ.प्र.

मत हाँकिए ज़नाब

हम ये किए हम वो किए मत हाँकिए ज़नाब।
पानी तक हम को ना दिए मत हाँकिए ज़नाब।।
विश्वास था आदर्श नैतिक मूल्य की रक्षा करोगे।
सब घोलकर के पी गए मत हाँकिए ज़नाब।।
झूठे नारे घोषणायें अब हज़म होती नहीं।
वादे हम इतना खलिए मत हाँकिए ज़नाब।।
विकास लेकर क्या करेंगे क्या करेंगे चाँद-मंगल।
रोटी तो पहले दीजिए मत हाँकिए ज़नाब।।
आम जन की जिन्दगी कितनी सुरक्षित है यहाँ।
खुद से ही 'कक्का' पूछिए मत हाँकिए ज़नाब।।
चुनाव के ही वक्त आते याद रिश्ते और नाते।
क्यूँ हमें बतलाइए मत हाँकिए ज़नाब।।

अजय चतुर्वेदी 'कक्का'
बीजपुर, सोनभद्र(उ०प्र०)

अम्बिका प्रसाद दिव्य पुरस्कारों हेतु कृतियां आमंत्रित है

भोपाल. शीर्ष ऐतिहासिक उपन्यासकार, कवि, चित्रकार एवं साठ महत्वपूर्ण ग्रंथो के सर्जक स्व. अम्बिका प्रसाद दिव्य की स्मृति मे प्रदान किये जाने वाले राष्ट्रीय ख्याति के दिव्य पुरस्कारों हेतु रचनाकारों से कृतियां आमंत्रित है. उपन्यास हेतु पांच हजार तथा कहानी और काव्य विधा के लिए इक्कीस सौ रुपये राशि के पुरस्कार प्रदान किये जाऐंगें. नाटक, व्यंग्य, ललित निबन्ध, पत्रकारिता, बाल साहित्य, दिव्य साहित्य पर शोध एवं साहित्यिक पत्रिकाओं को दिव्य-रजत अलंकरण प्रदान किये जायेंगें. पुस्तकें २००६ से दिसम्बर २००८ के मध्य प्रकाशित होनी चाहिए. पुस्तकों के साथ सौ रुपये प्रवेश शुल्क, लेखक/संपादक के दो रंगीन चित्र, ३० नवंबर २००६ तक श्रीमती राजों किजंल्क, साहित्य सदन, १४५-ए, साईनाथ, सी महावीर नगर, भोपाल-४६२०४२, म.प्र. के पते पर पहुॅच जाना चाहिए. अन्य जानकारी मोबाइल संख्या ०६६७७७८२७७७ पर ली जा सकती है. पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मंडल द्वारा किया जाएगा. उनका निर्णय अंतिम एवं सर्वमान्य होगा.

हिन्दी की बात

नेता करते नित्य ही, हिन्दी की तो बात।
अंग्रेजी व्यवहार से करते हैं आघात।।

हिन्दी दिवस मना लिया, क्या है इसमें शान।
बाकी पूरे साल भर, हिन्दी का अपमान।।

हिन्दी बिन्दी है 'रसिक', नित्य नियम व्यवहार।
अपनी भाषा से करो, स्वच्छ हृदय से प्यार।।

देशी नारी छोड़ कर, किया मेम से प्रेम।
शर्मनाक यह गेम है, शेम-शेम रे शेम।।

अपनी भाषा है 'रसिक', स्वतंत्रता की जान।
गौरव है यह देश की, चिन्ता कर पहचान।।

डॉ० सन्त कुमार टण्डन'रसिक' इलाहाबाद, उ०प्र०

कर्नाटक में हिन्दी के पितामह एवं वरिष्ठ साहित्यकार नागप्पा का निधन

दक्षिण भारत में हिन्दी के प्रथम परास्नातक, कर्नाटक में हिन्दी के पितामह कहे जाने वाले डॉ. एन. नागप्पा का निधन ५ जुलाई २००९ को हो गया. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान एवं मासिक पत्रिका विश्व स्नेह समाज परिवार दिवंगत नागप्पा जी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की.

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान

वाराणसी में सन् १९०५ में स्थापित हिन्दी प्रचारक परिवार के संस्थापक, निस्पृह समाज सेवी, साहित्यानुरागी एवं ऐय्यारी कथाओं के सुप्रसिद्ध लेखक श्री निहालचन्द बेरी तथा उनके यशस्वी पुत्र व हिन्दी प्रकाशन जगत के पुरोधा श्री कृष्णचन्द्र बेरी की पावन स्मृति में हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान की स्थापना की गयी हैं.

ये पुरस्कार प्रतिवर्ष राजस्थान प्रांत के अंग्रणी साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक प्रतिष्ठान 'साहित्य मंडल' श्रीनाथ द्वारा के तत्वावधान में आयोजित प्रभु श्री नाथजी के पाटोत्सव ब्रजभाषा समारोह (फाल्गुन कृष्ण सप्तमी) एवं हिन्दी लाओ-देश बचाओ समारोह, १४ सितम्बर हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर देश के किन्दी दो शीर्षस्थ साहित्यकारों को प्रदान किये जायेंगें. यह कार्यक्रम साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा के अध्यक्ष श्री नरहरि ठाकुर (प्रभु श्रीनाथजी के बड़े मुखिया) तथा प्रधानमंत्री एवं हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के अध्यक्ष श्री भगवती प्रसाद देवपुरा के संरक्षण में संपन्न होगा.

हिन्दी प्रचारक शताब्दी सम्मान २००९ का प्रथम पुरस्कार हिन्दी के प्रख्यात उपन्यासकार, विचारक एवं चिंतक डॉ. युगेश्वर एवं ख्यातलब्ध भाषाविद्, कोशकार तथा वैयाकरण डॉ० बदरीनाथ कपूर को देना सुनिश्चित किया गया है. यह सम्मान आगामी माह १४ सितम्बर को श्रीनाथ द्वारा में आयोजित भव्य समारोह में प्रदान किया जाएगा. पुरस्कार स्वरूप श्रीफल, शाल, उत्तरीय, श्रीनाथजी का प्रसाद, श्रीनाथजी के हाथ कलम का चित्र, अभिनन्दन एवं सम्मान-पत्र सहित ग्यारह हजार की राशि भेंट की जाएगी.

भारती को विश्वभारती प्रज्ञा सम्मान

इंदौर. साहित्यकार नन्दलाल भारती को साहित्य, शिक्षा, कला एवं संस्कृति के क्षेत्र में रचनात्मक कार्यो के माध्यम से अहिंसक, समाज सेवा एवं मानवीय सामाजिक मूल्यों की स्थापनार्थ योगदान हेतु निर्दलीय प्रकाशन, नई दिल्ली द्वारा विश्वभारती प्रज्ञा सम्मान-२००९ से सम्मानित किया गया. भोपाल में आयोजित इस समारोह में श्री लक्ष्मीकांत शर्मा, जनसपर्क मंत्री, म.प्र.,गांधीवादी चिंतक सुरेशचन्द्र दुबे, वाणिज्यकार अपीली बोर्ड के सदस्य गोकुल प्रसाद पटवा, शिक्षाविद श्री भागवतराव के कर कमलों से यह सम्मान प्रदान किया गया.

अध्यात्म

आत्ममंथन और कर्मयोग

✍ पं. बृजकिशोर दुबे, भोपाल, म.प्र.

आत्मायः केवल स्वस्थः शान्त सूक्ष्म सतातनः।
अस्ति सर्वान्तरः साक्षाच्चिन्मात्र स्तमस परः।।
सोडन्तर्यामीसः पुरुषः स प्राणः सह महेश्वरः।
स कालोडाग्नस्तद व्यक्त स एवेदमिति श्रुतिः।।

जो आत्मा अद्वितीय, स्वस्थ, शान्त, सूक्ष्म, सनातन सभी का अन्तरतम साक्षात चिन्मात्र और तमोगुण से परे हैं, वही आत्मा अर्न्तयामी है, पुरुष है, वही प्राण है, वही महेश्वर है, वही काल तथा अग्नि है, वही अव्यक्त है.

इस वैज्ञानिक तत्व ज्ञान स्वयं भगवान ने भक्ति सम्पन्न ब्रहमवादियों को दिया है. आत्मा के स्वरुप का सीधा सम्बंध शरीर और मन से होता है. चंचल मन ही मनुष्य स्वभाव का केन्द्र बिन्दु है. यदि मनुष्य की आत्मा अपने स्वभाव से मलिन तथा विकारयुक्त होती है, तो उसे सैकड़ो जन्म लेने पर भी मुक्ति नहीं मिलती है.

यूँ तो संसार की गति के अनुसार प्राणी जन्म लेता है और विलीन हो जाता है. किन्तु वह अपने जीवन में अज्ञानता के कारण आत्मा से आरोपित रहता है. ऐहलौकिक विविध ऐश्वर्यो के प्रति आसक्त होकर उन्हें प्राप्त करने हेतु उत्कंठित रहता है.

वही, वेदशास्त्र के प्रति निष्ठावान विद्वान, महन्त, साधु संत एवं योगी इस संसार को दान स्वरुप मानते हैं. उनके हृदय से सभी प्रकार की कु-कामनायें और कुण्ठित विचार समाप्त हो जाते हैं. वह सम्पूर्ण जगत को माया मात्र मानते हुए सांसारिक बन्धनों से मुक्त होकर अमृतमय जीवन व्यतीत करते हैं.

ईश्वर ने चौरासी लाख योनियों में मानव शरीर को जो सुविधायें एवं शक्तियां प्रदान की है, वह अन्य किसी को नहीं! यह प्राप्त सुविधायें और शक्तियां ईश्वरीय प्रयोजनों की पूर्ति करने में सहायक सिद्ध हो सकती है. ईश्वर ने यह मानव शरीर किसी विशेष उद्देश्य से दिया है. भौतिक सूखों के लिए नहीं.

यदि मनुष्य अपने शरीर की विशेषाताओं और ईश्वरीय उद्देश्यों को पहचान लेता है तो वह अपना ही नहीं, दूसरों के जीवन को भी सार्थक बना सकता है. यदि मनुष्य इनकी पूर्ति नहीं करता तो वह परमेश्वर के साथ विश्वास घात कर रहा है.

मानव जीवन के जन्म से मृत्यु तक किये गये कर्मो का रहस्योदघाटन गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्री रामचरित मानस में किया है-'करम प्रधान विश्व करि राखा। जो जब करहु सो तस फल चाखा।' उन्होंने सहज रुप से मानव को कुरीतियों और आडम्बरों से बचने की चेतावनी भी दी है.

प्रायः मनुष्य भौतिक सुख और काम वासना से वशीभूत होकर अपना संतुलन खो देता है, जिसके फलस्वरुप उसके समक्ष अनेकानेक अमंगल प्रसंग आते है, जिससे हानि भी हो सकती है. अतएव, उसे अपने जीवन की महत्ता,जीवन का उद्देश्य और जीवन के उपयोग के संबंध में अपनी मृत्यु के पूर्व आध्यात्मिक चिन्तन और मनन् करना होगा.

अपने जीवन में जो भी उपलब्ध है, उससे ही संतोष और सन्तुलन बनाये रख कर जीवन का आनन्द उठाना ही श्रेयस्कर है. भौतिकवादी मनुष्यों को प्रथम तो मानसिक रुप से अपने हृदय का शुद्धिकरण करना होगा, तभी उसे सफलता मिल सकती है. वह सामाजिक स्थिति का ध्यान रखते हुए ईश्वर की प्रसन्नता हेतु शुभ कार्यो को अपनाये, तथा स्वयम् द्वारा किये गये प्रत्येक कार्य ईश्वर को समर्पित करता रहे. सतसंग और गुरु दीक्षा प्राप्त करें. गुरु का चुनाव उसे सावधानी पूर्वक करना होगा. वर्तमान में ऐसे अनेक मिथ्याचारी व्यक्ति साधु का रूप धारण कर गुरु दीक्षा, भगवत भजन, एवं उपदेशक के रुप में मिल जाएगें जो उपदेश तो देते हैं, किन्तु स्वयम् अपने मन में भौतिक सुख और इन्द्रिय भोग की इच्छा रखते हैं. ऐसे दुषित प्रवृत्तियों वाले गुरु, नकली साधु सन्त दूसरों के हृदय को कैसे शुद्ध बना सकते है.

वर्तमान परिवेश में सामान्य व्यक्ति के लिये न तो वैदिक अनुष्ठानों के विधि-विधानों का पालन करना सम्भव है और ना ही वेदों के उद्देश्यों को सम्पन्न करने का, किन्तु वह भगवत नाम जाप करने का समय सहज ही अपनी दैनिक दिनचर्या में से निकाल सकता है.

सभी सनातनी धार्मिक ग्रंथों और तत्व ज्ञानी संतो ने उपदेश दिया है कि-'कल्ह और दम्भ के इस युग में मोक्ष का एक मात्र साधन भगवान के पवित्र नाम का जाप संकीर्तन करना है. भगवत् नाम कीर्तन से पूर्ण भक्ति का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है.

हरेनार्म हरेनार्म हरेर्नामैव केवलम्।
कलो नास्तयेव नास्तयेव गतिरन्यथा।।

सबसे बड़ा योगी, साधु और महात्मा वही है, जो भगवान के नाम जाप करने में आनन्द लेता है. भगवान की सेवा एवं उन्हें स्मरण करना ही कर्मयोग है. अतएव, प्रत्येक प्राणी को छम्भ योगी अथवा मिथ्या वेष धारण करने वाले नकली साधुओं की शरण में जाने की अपेक्षा अपन कर्म करते रहना अधिक श्रेयष्कर होगा.

अपने कर्मयोग से आत्मतत्व की गहराई में पहुँच कर प्रत्येक प्राणी अपनी आत्मा में ही समस्त आन्नद प्राप्त कर लेता है. वह आत्म-साक्षात्कार से अपनी चेतना को विकसित कर स्वर्ग, ईश्वर, दर्शन, भक्ति, मुक्ति का ब्रह्मानन्द प्राप्त कर सकता है.

स्नेह बाल मंच

जादूगर दोस्त

बबलू नवम वर्ग का एक होनहार छात्र था. स्कूल के सारे शिक्षक उससे प्यार करते थे. उसे जादू देखने का बहुत शौक था. एक दिन वह अपने स्कूल के दोस्तों के साथ जादू देखने गया था. वहॉ जादूगर सभी बच्च्चों को सम्बोधित करते हुए बोले कि जादू का अर्थ है 'नजरबंदी'. यह कहकर उसने जादू दिखाना प्रारम्भ किया. सबसे पहले जादूगर ने एक गुलदस्ता निकाला जिसके सारे फूल पीले थे, उसने जैसे ही दूसरे हाथ से फूलों को स्पर्श किया सारे फूल लाल रंग के हो गये. इसी तरह जादूगर ने जादू के कई खेल दिखाये. बबलू के सारे दोस्त आश्चर्यचकित हो गये, लेकिन बबलू मंद-मंद मुस्कुरा रहा था, क्योंकि उसे रसायनों के बारे में अच्छी जानकारी थी. उसे रंगो का परिवर्तन होना अच्छी तरह से समझ में आ गया था. स्कूल की छुट्टी होने पर बबलू सीधा अपने घर आया और भिन्न-भिन्न रसायनों से वस्तुओं का रंग परिवर्तन करने लगा. कुछ दिनों बाद, उसने एक दिन अपने दोस्तों से कहा कि मैं आज तुम लोगों को जादू दिखाऊंगा. स्कूल के टिफिन के समय उसने अपने सारे दोस्तों को एक जगह बुलाया और अपना जादू दिखाना शुरु किया. सबसे पहले उसने एक रुमाल को जलाया, आग से जलने के बावजूद भी रुमाल नहीं जला. दूसरे प्रयोग के तौर पर उसने किताब के ऊपर आग जला दिया, आग जली किंतु किताब बिल्कुल सुरक्षित थी. यह कारनामा देखकर उसके सारे दोस्त बबलू को एक कुशल जादूगर मानने लगे. बबलू अपने दोस्तों को समझाया कि यह जादू नहीं केवल रासायनिक अभिक्रिया है, जो जादू जैसा दिखता है. रुमाल को फिटकरी के पानी से धोकर जलाने से रुमाल कभी नहीं जलेगी. इसी प्रकार किसी कागज के ऊपर कपूर के वाष्प लगाकर जलाने से कागज नहीं जलती बल्कि वाष्प जलने लगता है. इस तरह बबलू के सारे दोस्त उसके विज्ञान के चमत्कार को समझ गये. वे फूले नहीं समा रहे थे, क्योंकि उनका एक दोस्त जादूगर जो बन गया था. ✍**ललिता कुमारी प्रजापति,** पंश्चिमी सिंहभूमि, झारखंड

बाल कविता

प्यारी भूरी बिल्ली
सड़क कूद कर आ गयी,
प्यारी भूरी कैट।
मोनू जी संग खेलने,
लाये सुन्दर बैट।
लाये सुन्दर बैट,
कैट बैठी थी ऐसे।
म्यॉऊ कर के मांग रही,
बिस्कुट को जैसे।
कहत 'बरैया' राय
मोनू जैसे ही बोले कड़क।
तुरत कूदकर भग गई,
प्यारी बिल्ली सड़क।

चुतर पक्षी है तोता

तोता बैठा खा रहा,
अच्छे-अच्छे आम।
जिसको देखे पास में,
कहता राम-राम।
कहता राम-राम,
पंख हैं हरे निराले।
लाल है उसकी चोंच,
नैन गोल मतवाले।
कहत 'बरैया' राय
बहुत कम ही वह सोता।
सब पर रखता नजर,
तेज पक्षी है तोता।

समय का लाभ उठाओ

समय नष्ट मत कीजिये,
समय बड़ा अमोल।
निकल गया यदि हाथ से,
हो जाओगे गोल।
हो जाओगे गोल,
ठण्ड में करो पढ़ाई
हो जाओगे पास
करेंगे सभी बड़ाई।
कहत 'बरैया' राय
समय का लाभ उठाओ
करो अंधेरा दूर
लगन की ज्योति जगाओ।?
✍**राम सहाय बरैया,** ग्वालियर, म.प्र.

प्रिय भैया/बहिनों
आप लोगों को इस अंक में ललिता दीदी व बरैया चाचा की रचनाएं दे रही हूँ. पसंद आये तो अपनी बहन को लिखिएगा.
आपकी बहनः *संस्कृति 'गोकुल'*

बच्च्चों के लिए आवश्यक सुचना

हिन्दी के प्रचार प्रसार व भैया/बहिनों को हिन्दी में ललक जगाने के लिए बाल्य शाखा का गठन किया जा रहा है। इस शाखा के लिए भैया बहिनों से कोई शुल्क नहीं लिया जाएगा। केवल जवाबी लिफाफा के साथ एक फोटो अपना पूरा नाम, पिता का नाम, पता, मोबाइल संख्या लिखकर निम्न पते पर भेजना होगा. सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-६३, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-२११०११

कहानी

पूर्व कथा

बैंक धोखाधड़ी के मामले में नामजद आशिक अली उर्फ छब्बन के पास तलाशी में एक अदद हनुमान जी की फोटो बरामद हुई. पुलिस ने उसके तार तस्कर या आतंकी संगठनों से भी जुड़े होने का शक जाहिर किया. पुलिस छब्बन को बूरी तरह पिटती है. यह खबर छब्बन का बूढ़ा दादा पूरे गांव में लेकर जाता है रोता है, पर रात को पुलिस चौकी जाने को कोई तैयार नहीं होता. सुबह गांव वाले कुछ करने की सोचते उसके पहले ही उसके पास से हनुमान जी की फोटो बरामद होने की बात पूरे गॉव में फैल जाती है. पास गांव के एकमात्र पढ़े लिखे, वकील को भी इसकी जानकारी होती है. वह इसकी घटना की गहराई से जानकारी एकत्र कर चौकी जाता है, पूरी बात दीवान को बताता है......

काश! वह मुझे बरी कर देता

ओम प्रकाश अवस्थी, बहराइच, उत्तर प्रदेश

अंतिम भाग

हालांकि, मैनें उस खबर को गॉव में दाखिल होते तो नहीं देखा था, मगर रहमान को सवेरे गॉव से बाहर होते जरुर देखा था. वही रहमान, जिसे पता था कि रसूल बक्स का विड्राल आठ सौ का है. वही रहमान, जिसे पता था कि कैशियर ने गलती से लड़के को आठ सौ की जगह अठारह सौ दे दिये है. और फिर उसने गिनने के बहाने हजार रुपये ऑख से काजल की तरह उड़ा लिये थे.... बेचारा बच्चा क्या जान पाता अपने रहमान चच्चा की वो करतूत. और आखिर में इसके उसी चच्चा ने कल रात अपने लफॅगे साथियों के साथ मुर्गे शराब का जश्न मनाया. हराम की रकम, दो चार घंटो से ज्यादा साथ न दे पायी थी उसका....

खैर छोड़िए, आपके उसी मुखाबिर खबरनीस के चलते हनुमाना वाली खबर आग जैसी पूरे गॉव में फैल गयी. लोग अपने घरों से बाहर आकर तौबा-तौबा करने लगे. हर जुबान पर बस एक ही बात, एक मुसलमान की जेब में हनुमान का बुत. गॉव का हर शख्स लड़के पर थूकने लगा, साला बुतपरस्त, काफिर. भीड़ में से कोई बोल पड़ा,

मगर हमारे गॉव में तो कोई बुतपरस्त है नहीं. फिर आखिर कहॉ से आ टपकी वह काफिराना तस्वीर छब्बनवा के पास?

इस बात पर सभी एक-दूसरे का मुॅह ताकने लगे. कुछ देर बाद एक बुजुर्गवार ने अपनी एक सफेद दाढ़ी का रुतबा दिखाते हुए बड़ी संजीदगी से कहा.

मेरे शक की सुई तो मंगलपुरवा की ओर उठती है. छब्बनवा ने बड़ी दोस्ती गॉठ रखी थी वहॉ के काफिर लौण्डों से. भला वह लोग कब चूकेंगे हमे नापाक करने से. खैर, अब आगे की सोचो. अगर गॉव का कोई लौण्डा अब कभी उधर को रुख करता दिखे तो उसकी टॉगे तोड़ दो..

बुजुर्ग अपनी बात पूरी कर पाता कि भीड़ चिल्लाने लगी,

ये लौण्डा तो मजहब का दुश्मन निकला. ..

कौम के लिए खतरा हो गया...

और उस खतरे के बढ़ते-बढ़ते नौबत यहॉ तक आ पहुॅची कि इस नन्हीं जान के चलते मोहरनिया और आस-पास की मुस्लिम बस्तियों में पूरा का पूरा इस्लाम ही खतरे में पड़ने लगा. और अगर कहीं लादेन पा जाता ये खबर, तो सारी दुनिया में इस्लाम खतरे में पड़ जाता.

तो जनाब दीवान साहब, फिर तो उस बदले हालात में लड़के को छुड़ाने वाली बात जाने कहॉ दफन हो गयी. और जो नयी बात सामने आयी, वो ये थी कि हवालात में सड़ने दो साले बुतपरस्त को. बूढ़ा कितना भी रोये गाये, पर किसी को भी नहीं फटकना है चौकी पर. साथ ही ये मुद्दा भी उभर कर सामने आया कि ऐसे मजहबी गद्दार को सजा क्या दी जाये? कुछ लोगों ने तो उसे हवालात से लौटने पर गॉव निकाला दिये जाने का फतवा भी जारी कर डाला.

वैसे, एक बार को चौंक तो मैं भी गया था इस बेसूली खबर से, मगर मेरा मानना है कि दुनिया में बेवजह कुछ भी नहीं होता. इस बात के पीछे भी कोई न कोई वजह जरुर होगी. साथ ही ये भी तय था कि इस अनहोनी की वजह कोई मुसलमान तो कभी हो ही नहीं सकता.

तब मैंने अपना वकीलनामा दिमाग दौड़ाया तो मुझे याद आ गयी उस बुजुर्गवार की कही मंगलपुरवे वाली बात. फिर तो मैं एक पल को भी रुका नहीं, और सीधा जा पहुॅचा मोहरनिया से फलॉग भर दूर के उस गॉव को. किसी जमाने में पुरबिया आ बसे थे वहॉ. बीस-पच्चीस घरों का छोटा-सा पुरवा. सभी हिन्दू. भला आप से क्या छिपा! आपका का तो ये इलाका ही है दीवान जी. मगर जो चीज आप से भी छिपी रह गयी, उसे मैं अब बताता हूॅ. कभी एक वक्त ऐसा भी था जब वहॉ के हिन्दुओं और मोहरनिया के मुसलमानों के बीच बड़ा मेलजोल हुआ करता था. तीज-त्योहार, शादी-निकाह, मरनी-धरनी, हर मौकों पर दोनों तबके साथ होते थे. मगर इस्माइल वाले केस के बाद दिलों में एक-दूसरे के लिये एक अन्जाना-सा शक समा गया था. लोगों के दिमाग भी बदल गये और निगाहे भी. मॅगलपुरवा वालों को मोहरनिया वाले इस्लामी आतंकवादी, और मोहरनिया के लिए मॅगलपुरवा वाले संघी लगने लगे थे. जबकि सच तो ये है कि उनमें किसी को भी न आतंक के

मायने पता है न संघ के.
मोहरनिया का इस्माइल, दाऊद का आदमी था और मुंबई में हुए सीरियल ब्लास्ट में शामिल था. और उसी गॉव का जुम्मन नाम का आदमी, जो बूढ़े रसूलबक्स का लड़का और इस छब्बन नाम के लड़के का बाप था, उसी पर ये इल्जाम था कि उसने गॉव में पड़े पुलिस छापे के दौरान इस्माइल को बचाने के चक्कर में वह खुद पुलिस की गोली का शिकार हो गया था.
ये सारी बातें आप के पुलिस रिकार्ड में दर्ज है. मगर दीवान जी, पुलिस रिकार्ड में दर्ज सारी बातें सौ फीसदी सही नहीं हुआ करती. इसमें जो बात गलत है, वो ये है कि इस लड़के के बाप जुम्मन ने इस्माइल को पनाह नहीं दी थी, बल्कि ए.के.४७ लिये जबरन घुस आया था उसके घर में. अब मैं आप से पूछता हूँ कि अगर कोई ए.के.४७ लेकर आधीरात में आप के घर में घुस आये तो क्या आप उसे निकाल पाने की हिम्मत कर पाओगे? फिर जुम्मन की क्या औकात थी कि वह उसे अपने घर से भाग जाने को कहता!
तो जब पुलिस ने उसके घर में घुसे इस्माइल को दबोचना चाहा तो उसने जुम्मन की आड़ ले ली. वह बच गया पर जुम्मन बेचारा वहीं ढेर हो गया और फिर उस सूरतेहाल में आप लोगों के लिए भी जरुरी हो गया कि अपने बचाव के लिये जुम्मन को भी दोषी करार दिया जाये. पनाह वाली बात के पीछे बस यही मजबूरी थी जुम्मन की, और पुलिस की भी.
दीवानजी, सच बात तो ये थी कि इस लड़के का बाप और दादा, दोनों बेहद शरीफ और सीधे इंसान थे. तीन बीघे जमीन थी. कुछ खेती और कुछ मेहनत मजूरी से गुजर-बशर करता था वह गरीब खानदान. इस बच्चे की मॉ भी बड़ी नेक थी. मगर लड़के की पैदाइश पर दम तोड़ गयी थी बेचारी. फिर बाप और दादा ने मिल कर पाला था इसे.
और जब ये आठ साल का था तभी इस्माइल वाला हादसा हुआ. इस मासूम की ऑखों के सामने ही पुलिस ने इसके बाप को गोली मारी थी, और इसके सामने ही वह खून से लथपथ जमीन पर पड़ा फड़फड़ाने लगा था. फिर इसने अगले ही दिन उसी बाप को जमीन में हमेशा के लिए दफन होते भी देखा था, जिसकी गोद में उस मनहूस रात तक खेला था ये बदनसीब बच्चा.
यही वजह है जो बचपन का वह खौफ, इसके दिमाग में अब तक बदस्तूर है. खाकी वर्दी को देखते ही ये भागता है. छिपने को पेड़ पर जा चढ़ता है, भूसे की टाल में, या फिर चारपायी के नीचे जा घुसता है. पूरा इलाका जानता है इसकी इस कमजोरी को.
तो अब मैं फिर लौट आता हूँ मॅगलपूरवा वाली बात पर, कि जब मैं पुरवे के नजदीक पहुॅचा तो मुझे गॉव के बाहर कुछ लोग खेलते दिख गये. उन्हीं में एक था मोहन, जिसने बताया कि छब्बन से उसकी दोस्ती है. बाप के मरने के बाद, एक दिन ये उससे रोने लगा. बोला, 'गॉव के एक चच्चा कहते हैं, पुलिस ने जैसे तुम्हारे बाप को गोली मारी थी, वैसेही तुम्हें भी मार देगी. मुझे बहुत डर लगता है. अब मैं तुम्हारे पुरवा नहीं आऊॅगा मोहन...' मोहन बोला, 'डरो मत. देखो, मैं तो बिल्कुल नहीं डरता क्योंकि मेरे पास हनुमान जी है, वही गदा वाले. वे मेरी रक्षा करते हैं.' तब छब्बन ने कहा, 'मगर मेरे पास तो नहीं है. तुम्हारे पास दो हों तो एक मुझे दे दों.'
मोहन दौड़ता घर गया और हनुमान जी को लाकर पकड़ा दिया. जिसे पाकर ये नादान खुश हो गया और मुतमईम भी. बेचारा क्या जाने कि यही तस्वीर आगे चलकर उसके गले की फॉस बन जायेगी....
तो दीवान जी, बस इतनी सी ही बात है, उस फोटो के पीछे. जिसके चलते ये अदना सा बच्चा मुसलमानों की निगाह में कौम का दुश्मन हो गया और आप की निगाह में ठग या आतंकवादी. उसके बारे में आपने ऐसी राय कैसे कायम कर ली, ये आप जानें. मगर गॉव वालो की राय का मैं खुलासा करता हूॅ तो सूनिये दीवान जी.
शायद आपने देखा भी हो, मोहरनिया में एक मदरसा है. वहॉ मोहरनिया और आस-पास गॉवों के सभी मुसलमान बच्चे पढ़ते हैं. जो आज बड़े बूढ़े है, वे भी कभी न कभी वहॉ पढ़े जरुर हैं. जाहिर-सी बात है कि इस लिहाज से वहॉ सब के सब तालीम याफ्ता है, तो भी उनकी गिनती अनपढ़ों में होती है. आखिर क्यों?
क्योंकि मदरसे की वह तालीम, खुद को वक्त के सॉचे में ढाल न सकी. उसकी सबसे बड़ी खामी ये, कि उसमें उस जमीनी हकीकत को शामिल ही नहीं किया गया, जिस जमीन पर हम रहते हैं.
जगह-जगह की अपनी खासियत होती है दीवान जी. ये धरती कहीं भी एक सी नहीं हैं. कुदरत की मुश्किलें और नियामतें भी एक सी नहीं. हिन्दुस्तान में जो फायदा गाय दे सकती है, वो ऊँट नहीं. जो यहॉ के फल दे सकते है, वो खजूर नहीं. कोई सिर के बल खड़ा हो जाये, पर गंगा-जमुना के दोआबे में बादाम और पिस्ते की खेती नहीं हो सकती. यही बात खान-पान, पहनावे और बोली-बानी में भी लागू है. हमारे लिए जितनी जरुरी हिन्दी है, अरबी-फारसी नहीं हो सकती.
मगर इन जमीनी हकीकतों को मजहबी तालीम में शामिल ही नहीं किया गया. नतीजा ये कि हम कभी पल्स पोलियों की मुखालफत करने लगते हैं तो कभी

फैमिली-प्लानिंग की. तुर्रा ये, कि ये बातें हमारे मजहब में लिखी ही नहीं. दीवान जी, आप ही बताओ कि इन बातों का मजहब से क्या वास्ता?

जाहिर सी बात है कि एक ओर हमारा दीनी मजहब, तो दूसरी ओर जमीनी मजहब. जरुरी दोनों है, तो बीच का रास्ता कैसे निकले? और उसे निकाले कौन? जो निकालने वाले हैं, उनसे क्या उम्मीद करें हम, जब उन्होंने इमराना का उसके शौहर से तलाक कराकर उसे उसी दरिन्दे के साथ बॉध दिया, जिसने ससुर होकर भी उसकी इज्जत लूट ली थी.

तो ऐसे इन्साफ पसन्द है हमारे कठमुल्ले, जिनके हाथों में कमान है हमारी मजहबी तालीम की. वे जिसे चाहें, काफिर करार दे दें. और जिसके खिलाफ चाहें, जेहाद छेड़ दे. उनकी डिकश्नरी में इन दो लब्जों के माइने क्या है, आप जानोगे तो होश फ़ाख्ता हो जायेगें आपके.

जेहाद के नाम पर जाने कितनी बस्तियॉ तबाह कर दी गई, मगर ये कुछ न बोले. बामियार की पहाड़ियॉ उड़ा दी गई, ये कुछ न बोले. वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर ढहा दिया गया, ये तब भी कुछ न बोले. और सीरियल बम ब्लास्टों का जो सिलसिला चल निकला, वो आज तक रुकने का नाम ही नहीं लेता. मगर ऐसे हादसों में हलाक होने वाले बेकूसूरों के लिए न इनके मुँह में जुबान है, न ऑखों में पानी.

हॉ, अगर धरती के किसी कोने में केई पागल किसी मस्जिद की एक ईंट भी हिला दे, या कोई सिरफिरा कार्टूनिस्ट एक बेहूदा कार्टून बना दे, तो ये गला फाड़-फाड़ कर पूरे के पूरे इस्लाम के खतरे में पड़ जाने का ऐलान कर डालते हैं. फिर छोड़ते रहेगें ताबड़तोड़ फतवों के तीर, जब तक कहीं कोई बड़ा हादसा न हो जाये....

तो अब मैं अपनी जुबान को लगाम देता हूँ दीवान जी. वैसे, इस बच्चे को काफिर दिये जाने की वजह तो अब आप जान ही गये होंगें, और जब यह लौटकर अपने घर पहुँचेगा तो शुरु हो जायेगा इसके खिलाफ ज़ेहाद. मुँह काला, गॉव निकाला, जिला निकाला, या फिर देश निकाला.... अपने पाक दिलों से तो गॉव वाले इस काफिर बच्चे को पहले ही निकाल चुके हैं. हालॉकि मेरे रहते यह सब मुमकिन नहीं.

बात पूरी करके वकील खामोश हो गया था.

उसके चुप होते ही उस चौकी आफिस में सन्नाटा पसर गया. कुछ वक्त गुजर जाने के बाद दीवान ने निगाहें उठायीं. कोने में सोये पड़े लड़के को एक बार घूर कर देखा, फिर सामने बैठे वकील को. उसके चेहरे पर रह-रह कर तनाव उभर आता, जिसमें अफसोस तो कम, मगर गुस्सा कुछ ज्यादा ही झलकने लगता था. माथे की सिलवटें बनती-बिगड़ती रहीं, मगर भौंहों के बीच की सिकुड़न लगातार बढ़ती ही गयी. वकील चुपचाप उसके मनोभावों को तोड़ने में लगा था, कि अचानक दीवान ने मेज पर बड़ी जोर का घूँसा पटका और झटके के साथ उठ खड़ा हुआ. वकील जब तक कुछ समझ पाता, वह दहाड़ पड़ा

व्यंग्य रचना

कुबेर स्त्रोत

हे कुबेर महाराज
मेरे देश पर थोड़ी-सी कृपा कर दीजिये
मेरे देश को विपन्नता के संकट से
अबकी उबार दीजिये
किसी दिन रात में चुपके से
भारत के वित्त मंत्रालय के कार्यालय में
अपने खजाने का थोड़ा-सा हिस्सा डाल दीजिए
लेकिन रुकिये
ऐसा करने में धोखा हो सकता है
कहीं ऐसा न हो कि
कार्यालय में जो कर्मचारी सबसे पहले आये
वह सारा का सारा माल हड़प जाये
ऐसा करिये
आप किसी कार्यदिवस में खुद ही प्रकट होकर
हमारे वित्त मंत्री को माल सौंप दीजिए
और बता दीजिए कि
गांधी, लोहिया व जे.पी. की आत्मा की प्रार्थन पर
मार्क्स व लेनिन की आत्मा के टेलीफोन पर
आपको यह सब करना पड़ रहा है
परन्तु आप ठहरे देवता
हो सकता है ऐसा करना
आपकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल हो
छोड़िये! फिर ऐसा करिये
आप विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष के
अध्यक्ष का रूप धारण करिये
और हमारे वित्त मंत्री जी से मिलकर
उन्हें थैला सौंप दीजिए
और बता दीजिए कि भारत की
अर्थ-व्यवस्था में किये गये आमूल-चूल
परिवर्तनों से खुश होकर
आप उन्हें यह भेंट प्रदान कर रहे हैं
जैसे भी संभव हो हमें
डंकल के डंक से
नवउपनिवेशवाद के चंगुल से
बचा लीजिए
ताकि संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त
'समाजवादी' शब्द
राज्य के नीति-निर्देशक तत्वों की तरह
एक आदर्श बनकर रह न जाय।

अनुराग मिश्र 'गैर', बुलन्दशहर, उ.प्र.

वकील साहब!
और तमतमाता कमरे से बाहर निकल गया. उसकी दहाड़ में खीझ के साथ-साथ हुक्म की हनक भी छिपी थी कि कुर्सी छोड़ झट बाहर आ जाओ.. किन्तु वकील वहीं जमा बैठा रहा अवाक्. उन्हीं चन्द लम्हों में वह जाने क्या-क्या सोच गया,
अपनी मॉद में भेड़िया भी शेर से कम नहीं होता. ये कोर्ट नहीं पुलिस चौकी है. उसका इन्चार्ज भरे गुस्से में है. जाने के बाद इज्जत लौटती नहीं, बाद में कोई कुछ भी कर ले. कलम बाद में जीतती है, बन्दूके पहले जीत जाती है.
आखिरकार, वक्त की नज़ाकत को भॉपते हुए वकील ने आगे की कार्य-योजना बना डाली. धीरे से उठा. दबे कदमों कमरे से बाहर आया. और पूरी सर्तकता बरतते हुए दीवान से पर्याप्त दूरी बनाकर खड़ा हो गया.
मगर दीवान ने निगाह उठाकर उसकी ओर देखा तक नहीं. वह खड़ा-खड़ा अपने पुलिसिया बूट से नीचे की फर्श को कुछ ऐसे कुचलता रहा जैसे उसके जूते तले कोई बिच्छू या कनखजूरा आ पड़ा हो.
थोड़े से इन्तजार के बाद बातों की शुरुआत वकील ने ही की. वह बहुत सधे व संयत स्वर में बोला.
आप कुछ उलझन में दिखते हो दीवान जी, आखिर बात क्या है?
इतना सुनना था कि दीवान हथगोले जैसा फट पड़ा...
स्साला ये गुस्सा! इतना तेज चढ़ आया है कि....
गुस्सा...! वकील शंकित होता पूछ पड़ा, मगर किस पर?
क्या बताऊँ किस पर? दीवान दॉत पीसता गया और गुस्सा उगलता गया, खुद पर. अपने आप पर. अपनी नौकरी पर. अपनी वर्दी पर. जी चाहता है कि उखाड़ फेकूँ ये पीतल के बिल्ले. ...चिर्री-चिर्री कर डालूँ ये खाकी कमीज...उठाऊँ डण्डा और चटका दूँ अपनी उँगलियों के जोड़-जोड़.....
वकील भौचक रह गया, अरे! ये मरा-मरा की जगह राम-राम कैसे? या फिर ये इसकी कोई चाल तो नहीं? उसके मन की थाह पाने को वकील ने भी अपना पैतरा बदला. वह उसके प्रति सहानुभूति दर्शाता बोला,
आपकी इतनी इज्जत और रौबदाब वाली सर्विस! उसके बारे में ऐसी बेतुकी बातें क्यों सोचने लगे आप?
इसलिए कि इस वर्दी की ताकत ने मुझे भीतर ही भीतर बहुत कमजोर कर डाला है वकील साहब....
कहते-कहते उसकी आवाज कॉप गई. मगर वह अपने कम्पित स्वर में ही बोलता गया,
यही उम्र. यही कद. रंग-रुप में भी ज्यादा फर्क नहीं. क्या उसके साथ भी मैं कर सकता था ऐसा ही सुलूक?
शायद नहीं... बिना समझे ही बोल गया वकील. मगर कुछ समझते ही पूछ पड़ा,
पर वह है कौन इस बच्चे से मिलता-जुलता, जिसकी बाबत कह रहे हो आप?
मगर दीवान उसकी अनसुनी करता अपनी रौ में बोलता गया, कहते हो, शायद नहीं! मगर क्यों नहीं? इसलिये कि वो अपना खून है! इसलिये कि मैंने उसे पैदा किया था! मरने के बाद वह मेरी अर्थी को कन्धा देगा...!
कहता-कहता दीवान हॉफने लगा. तो भी वह रूक न सका. सॉसे फूलती रही, और वह बोलता रहा.
याद करो वकील साहब, अभी कुछ देर पहले आपने क्या कहा था....?कहा था कि हम लाख पत्थर दिल या कमीने क्यों न हो पर ज्यादती देखकर एक न एक बार दहल जरुर जाते है... और यह भी कहा था कि हम डर इसलिए जाते हैं कि खुदा न खास्ता कहीं ऐसा ही कुछ हमारे घर वालों के साथ न हो जाये....तो तुमने गलत क्या कहा था! हो क्यों नहीं सकता जब सिस्टम ही ऐसा है, और सिस्टम वाले हम जैसे.. खैर छोड़ो. एक गुजारिश है आपसे. मेरा एक काम कर देना...
कहते-कहते उसने अपनी जेब में हाथ डाला. हनुमान जी का एक छोटा सा फोटो कार्ड और बत्ती की शक्ल में लिपटे कुछ नोट उसकी उँगलियों में फॅसे बाहर आ गए. वह उन्हें वकील की ओर बढ़ाता बोला.
ये रुपये उस बूढ़े को, और इस बच्चे को...दे देना और उसे लेते जाना अपने साथ, बिना मेरे लौटने का इन्तजार किये. मैने उसे बरी कर दिया है...
बात खत्म होते ही उसने अपने पॉव घुमा लिये और तेजी से चल पड़ा. मगर पीछे उसके बुदबुदाने की आवाज सुनायी दी, काश, वह भी मुझे बरी कर देता... +++++++

मुवक्किल

मुवक्किल ने फोन किया, भयभीत बेहिसाब।
'मत घबराना मैं हूं न' बोले वकील साब।।
बोले वकील साब, बचाकर ही दम लूंगा।
कुछ भी हो मैं तुमको जेल न जाने दूंगा।
कहें 'मनमौजी' कहा मुवक्किल झेल रहा हूँ।
जेल से ही वकील साब मैं बोल रहा हूँ।।

परदा

पत्नी बोली खिड़की पर, लगवा देना पर्द।
मुझे देखता घूरकर, घर बैठे वह मर्द।।
घर बैठे वह मर्द, रखें खुद खिड़की खोला।
बेवजह तुम टेंशन क्यों ले रही मैं बोला।।
कहे 'मनमौजी' बिन मेकअप तुमको देखेगा।
खुद की खिड़की में परदा वह लगवा लेगा।।
उमाशंकर दुबे 'मनमौजी, भोपाल

कविताएं

बरसात में

खुल गये
एलबम स्वर-सप्तक से
यादों की बारात के।
धुल गये
आवरण विस्मृतियों के
अनन्त आकाश से।
रूहानी पटल पर
चित्र विचित्र अतीत के
लगे उभरने-मचलने
हर पल भीगा-भीगा
लगा नहाने गाने बरसात में।
उड़ चले हौले-हौले
हंस समीर के
उजले-उजले, भीगे-भीगे
संग-संग फुहारों की कतार के
करने समर्पित सर्वस्व
सरस रसा को सौगात में।
कर रही-नखशिख श्रृंगार
नदियां युवतियां
फूलो की घाटियां
केसरिया क्यारियां
रिमझिम-रिमझिम थिरकती
बूदो के सपनो की शीतल छॉव में।
पी रही हाला
हवेली नवेली नशीली
नहा रही मधुशाला
पर बहा रही
टप-टप ऑसू झौपड़ी
मटमैली जीर्णशीर्ण मांद में।
भर रहा कुलाचे कहीं
मृगछौना भोला भाला
बचपन की कागजी नाव में।
कहीं रंग अनंग के
लगे चहकने दहकने
अल्हड़ मयूर से
यौवन के गीले-गीले गॉव में।
कहीं अकुलाती
ॲखियां विरहिन प्यासी
हो रहीं बरसात-बरसात में।
बह गये ढह गये कई
जी गये डूबते-डूबते कई
हो गये मन तरबतर कितने
सावन की झूपती हाट में।
कहीं लगे लहरने
रंग गंग-तरंग से
हरितिमा के गद्गद् गात में
रह गये प्यासे
फिर भी कई अभागे
कमनीय कादम्बिनी के
वामिनी के महारास में।

मुखराम माकड़ 'माहिर, राजस्थान

++++++++++++++++++

सत्ता

सत्ता एक सुन्दरी
बैठे चारो ओर चातक
राजनीति बना दी वेश्या
ताकते चंहु ओर दलाल
चातकों की चाह में
दलालों के मुनाफे में
किसी ने बाहुबल से
किसी ने बारुदी बल से
किसी ने साम-दाम, किसी दंड-भेद
से घेरना शुरु किया
चुनाव को चारपाई बना
सुन्दरी को वेश्या बना दिया
अब जिसमें जोर उसकी जोरु
जो कमजोर उसको वेश्या
जनता तो पॉच साल में किसकी हो
सत्ता
नेता, दलाल और लोभी बांटे भत्ता
जनता को चारों ओर से गुमराह करें
शिक्षित, विभक्त, गरीब जनता
खंड-खंड वोट करें
अब एक सत्ता सारे हकदार
संसद बन गया अखाड़ा
जो संख्या में ज्यादा
उसकी सुन्दरी
भोगों पॉच साल तक
और भोग विलास का व्यय उठाये
जनता
शेष राह तकते अगली बार अपनी हो
बारी-बारी भोगी जाये सत्ता
आज तुम्हारी, कल हमारी
फिर मेरी बारी, आगे न जाने किसकी।

देवेन्द्र कुमार मिश्रा, छिन्दवाड़ा,म.प्र.

+++++++++++++++++++++

भारत माता

नयी पीढ़ी की
उदास आँखों को
आज़ादी का सूरज
झुलसा रहा है।
बेकारी लाचारी का
भयँकर अजगर
कितनी जवानींया
निगलता जा रहा है।
भोली मासूम कलियाँ
बाज़ार में बिकती हैं
कुछ को दहेज का दानव
ज़िन्दा जला रहा है!
त्राही त्राही कर रहे
करोड़ो भारतवासी
रोटी-कपड़ा-मकान बिना
ये कैसी भूखी आज़ादी है!
भारत माता रो रो कर
अपने सपूतों को बुलाती है
ख़ाली पेट फ़टी चोली पहिन
हर चौराहे पर हाथ फैलाती है।
पुलिस का डण्डा घूमता है
रोते रोते पब्लिक पार्क में
पत्थर की गन्दी बेन्च पर
थक हार कर सो जाती है।

डॉ. सुमि ओम शर्मा 'तापसी', मुम्बई

न हि देहभृता शक्यं त्यक्तुं कर्माण्यशेषतः।

शरीर धारी किसी भी व्यक्ति के द्वारा सम्पूर्णता से सब कर्मो का त्याग किया जाना सम्भव नहीं है।

गीताः अध्याय-१८, श्लोक-११

साहित्य समाचार

डॉ० पाठक को कविगुरु रवीन्द्र नाथ ठाकुर सारस्वत सम्मान

जीन्द. लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यकार, पत्रकार एवं कवि कुलचार्य डॉ० केवल कृष्ण पाठक को उनकी साहित्य सेवा साधना, साहित्यिक अवदान, समपर्ण एवं साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान के उपलक्ष्य में कोलकाता की साहित्यिक संस्था भारतीय बाङ्मय पीठ के महामंत्री श्री श्याम लाल उपाध्याय एवं प्रो. डॉ. अभिजीत भट्टाचार्य, संयोजक, सम्मानोपाधि अलंकरण समिति द्वारा कवि गुरु रवीन्द्र नाथ ठाकुर सारस्वत सम्मान से अलंकृत किया गया. भारतीय वाङ्मय पीठ के महामंत्री श्री श्याम लाल उपाध्याय ने कहा कि राष्ट्रीय संचेतना-जागृति के साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक मासिक पत्र 'रवीन्द्र ज्योति' ने डॉ. पाठक के वैदुष्यपूर्ण सम्पादन में अड़तीस वर्षो की दीर्घयात्रा पूरी कर अमरता की मोहर लगा दी है. डॉ. पाठक के वैदुष्यपूर्ण सम्पादन में अड़तीस वर्षो की दीर्घयात्रा पूरी कर अमरता की मोहर लगा दी है. डॉ. पाठक साहित्य जगत के अप्रतिम सुचिन्तक है. इन्होनें साहित्यकार के कार्यकलाप, उनकी सेवा साधना, अवदान आदि बहुल पक्षों के उद्घाटन द्वारा प्रोत्साहित किया है.

इनके द्वारा रचित 'युवा देश के जागो', जीवन तेरे कितने रंग, वंदना के स्वर, पीड़ा मन की, मातृ वंदना, आत्मा की पुकार, आत्मदीप, खरी-खरी काव्य संकलन साहित्य जगत में सराहे गए हैं. इनके द्वारा हरियाणा काव्य संकलन 'काव्य वाटिका', अभिनंदन, मधुर-मिलन, मंगलम का संपादन किया जा चुका है. आत्मदृष्टि मासिक के संपादक मंडल के सदस्य है.

सम्मान प्राप्ति पर विश्व स्नेह समाज पत्रिका परिवार की तरफ से डॉ. पाठक को हार्दिक बधाई.

'बढ़ते चरण शिखर की ओरः कृष्ण कुमार यादव' लोकार्पित

युवा प्रशासक एवं साहित्यकार कृष्ण कुमार यादव के व्यक्तित्व-कृतित्व पर आधारित पुस्तक 'बढ़ते चरण शिखर की ओरः कृष्ण कमार यादव' का लोकार्पण कानपुर में ६ मई २००९ को सुविख्यात साहित्यकार पद्मश्री गिरिराज किशोर द्वारा किया गया. साहित्य संगम, इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित इस पुस्तक का सम्पादन लेखक एवं कवि दुर्गा चरण मिश्र ने किया है. लोकार्पण के बाद मुख्यअतिथि श्री गिरिराज किशोर ने कहा-' लेखन के क्षेत्र में दिनो दिन चुनौतियां बढ़ती जा रही है और इन चुनौतियों के बीच ही लेखक का व्यक्तित्व उभर कर सामने आता है. पद्य की तुलना में गद्य लिखना कहीं अधिक मुश्किल कार्य है लेकिन अब तक एक काव्य, दो निबंध ा संग्रह और क्रांतियज्ञ जैसी पुस्तकें लिखकर श्री यादव अपनी सशक्त रचनाध र्मिता का परिचय दे चुके है. उच्च प्रशासनिक पदों की तमाम व्यस्तताओं के बीच श्री यादव ने जिस तरह साहित्य की ऊँचाईयों को स्पर्श किया है वह समाज और विशेषकर युवाओं के लिए प्रेरक है. ऐसे युवा व्यक्तित्व पर इतनी कम उम्र में पुस्तक का प्रकाशन स्वागत योग्य है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राष्ट्रअखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर, राजस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान ०८ के अन्तर्गत ग्वालियर के साहित्यकार राम सहाय बरैया को 'काव्य कल्पज्ञ' की मानद् सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया. श्री बरैया जी की पॉच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की तरफ से हार्दिक बधाई.

उषा यादव को साहित्य श्री सम्मान

पं. गोविन्द वल्लभ पंत कृषि विश्वविद्यालय, चम्बा उत्तराखंड के वानिकी सभागार में आयोजित अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन के २१वें राष्ट्रीय अधिवेशन में इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश की वरिष्ठ शाइरा उषा यादव 'उषा' को उनकी साहित्य सेवा के उपलक्ष्य में साहित्य श्री की उपाधि से विभूषित किया गया. ३० मई को डॉ. एम.सी.नौटियाल, प्रोफेसर व डीन गो.व.पं विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में आयोजित अधिवेशन में श्रीमती उषा को श्री सतीश चतुर्वेदी, राष्ट्रीय सचिव अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन, भोपाल के कर कमलों से प्रदान किया गया. अधिवेशन में डॉ. पोथकुची सांबा शिवाराव, डॉ. एन बी पाटिल, डॉ. मूलाराम जोशी, प्रो. मधुप पांडे, डॉ. अहिल्या मिश्र को भी सम्मानित किया गया.

बरैया को 'काव्य कल्पज्ञ' की मानद उपाधि

अखिल भारतीय साहित्य संगम, उदयपुर, राजस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान ०८ के अन्तर्गत ग्वालियर के साहित्यकार राम सहाय बरैया को 'काव्य कल्पज्ञ' की मानद् सम्मानोपाधि से अलंकृत किया गया. श्री बरैया जी की पॉच पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है. विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान की तरफ से हार्दिक बधाई.

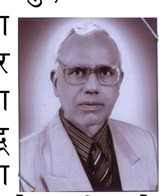

खेल की दुनिया

वाली बॉल

स्मेशिंगः-यह स्कील वालीबॉल का अति महत्वपूर्ण कौशल है,को नेट के ऊपर से शक्ति के साथ विपक्षी कोर्ट में मारने को स्मैश कहते हैं। इस कौशल से अंक बनने की सम्भावना प्रबल होती है। स्मैश में निम्नलिखित टीचिंग स्टेज होती हैं।

१. एप्रोच रनः-इसमें खिलाड़ी चलता हुआ या तेजी से ३ स्टेप में अप्रोच रन लेता है। खिलाड़ी परिस्थिति के अनुसार अपने अप्रोच रन को घटा एवं बढ़ा सकता है। अप्रोच रन के द्वारा खिलाड़ी बॉल के नीचे या सामने बॉल को रखने के लिये करता है। नियमतः अप्रोच रन में पहला कदम छोटा होता है। दूसरा कदम उससे बड़ा एवं तीसरा कदम उससे भी बड़ा होता है।

२.टेक ऑफ-अप्रोच रन के तुरन्त बाद टेक आफ होता है, तीसरे कदम में एड़ी द्वारा शरीर को रोक लगायी जाती है। दूसरा पैर पहले पैर के बराबर आता है। घुटने मुड़े होते हैं। कुल्हें नीचे की तरफ आते हैं। शरीर आगे की तरफ थोड़ा झुकता है। दोनों को शरीर में स्विंग देने के लिए पीछे की तरफ ले जाते हैं। शरीर का भार पैरों की एड़ी पर आता है एवं हाथ स्विंग के साथ आगे की ओर आते है। खिलाड़ी जमीन को धकेलते हुए टेक आफ लेकर हवा में जंप करता है। बाडी पोजिशन इन द एयर टेक आफ के बाद हवा में अपने शरीर को सम्पूर्ण रूप में खोलना होता है एवं (arch) या semi curve पीछे की तरफ बनाते हैं जिससे अधिकतम रेंज से ऊपर की तरफ से बॉल को attack किया जा सके।

कान्टैक्ट आफ द बाल-आर्च बनाकर बॉल को पूरी शक्ति के साथ बॉल के ऊपरी हिस्से पर मारना चाहिये।

लैडिंग-बॉल को मारने के बाद लैडिंग आती है। लैडिंग हमेशा पंजे पर होनी चाहिये, और पैर थोड़ा मोड़ लेते हैं जिससे शरीर की शक्ति कम हो सके।

Teaching Stages

१- स्टैन्स Stance

२- शरीर की स्थिति Body Position

३- बॉल के साथ सम्पर्क Contact off the Ball

४- फॉलो थ्रो (Follow through)

इस प्रकार के पास में स्टैन्स Stance एवं डाईगनल (Diagnal) दोनों प्रकार से खिलाड़ी अपनी सुविधानुसार ले सकते हैं। शरीर का भार दोनों पैरों पर सामान्य होगा। हाथ चेहरे (Face) के पास तक पास के समय उठेंगे, पैरों की दरी सामान्य होगी। घुटने थोड़ें से मुड़े होगें, कुल्हें थोड़े से नीचे की ओर होंगे। शरीर आगे की ओर थोड़ा मुड़ा होगा तथा बॉल की दिशा में होगा। शरीर आगे की ओर थोड़ा सा झुका होगा। जहां तक सभव हो बॉल शरीर के आगे रहनी चाहिये। शरीर का वेट (वजन) दोनों पैरों पर बराबर होगा। दोनों हाथ साथ-साथ या एक हाथ को बन्द करके दूसरे हाथ की मुट्ठी में रखते हैं।

बाल से सम्पर्कः-

दोनों बांधे हुये हाथों के बीच में बॉल को लेने का प्रयास करेंगे। किसी भी स्थिति में अंगुलियां आपस में फंसी (locking) नहीं होगी। आजकल नये नियम के अनुसार शरीर के किसी भाग से खेल सकते हैं। बॉल का contact सम्पर्क कलाई तथा कोहनी के बीच के भाग में होना चाहिये।

Follow through:-

अण्डर हैण्ड पास के बाद शरीर को सन्तुलित Balance करने के लिये एक कदम बॉल को follow करेंगे। यह स्वाभाविक रुप से होगा।

१७वां अ.भा.हिन्दी साहित्य समारोह २४-२५ अक्टूबर को

गाजियाबाद में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य समारोह की श्रृंखला का १७वां सम्मेलन आगामी २४-२५ अक्टूबर को स्थानीय हिन्दी भवन में आयोजित किया जायेगा। सम्मेलन का मुख्य विषय है-'भाषा संस्कारों की जननी है'. इस विषय पर दो सत्रों में चर्चा व आलेख प्रस्तुत किए जायेंगे. इसी के साथ, प्रतिवर्ष की भांति अखिल भारतीय पत्र-पत्रिका एवं पुस्तक प्रदर्शनी, सांस्कृतिक संध्या, कवि सम्मेलन और राष्ट्रस्तरीय नामित सम्मानों से देशभर से चुने हुए विद्वानों को अलंकृत किया जायेगा।

सम्मेलन से संबंधित विस्तृत विवरण तथा नामित सम्मनों के लिए प्रविष्टि विवरण के लिए स्वयं का पता लिखा लिफाफा भेज कर संपर्क कर सकते है

उमाशंकर मिश्र,

मुख्य संयोजक व संपादक, यू.एस.एम.पत्रिका

६६५, न्यू कोट गांव, जी.टी.रोड, गाजियाबाद

(फोनः २८६०११०, ९८१८२४६६०२)

आपने कुछ कहा

नये कलेवर में पत्रिका अच्छी लगी

पत्रिका का सुश्री बी.एस.शांताबाई विशेषांक प्राप्त हुआ. धन्यबाद. नये कलेवर में प्रकाशित पत्रिका अत्यन्त पसन्द आई. हिन्दी को लोकप्रिय बनाने में हिन्दीत्तर भाषा-भाषी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. सुश्री शान्ताबाई जी भी इस कार्य में पूर्णतः समर्पित है.

डॉ. निर्मल सिंहल, केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद, नई दिल्ली.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

पत्रिका पढ़कर मैं पूरी तरह मोहित हो गयी

आपकी कृपा से मुझे पत्रिका का एक अंक मिला. मेरा ध न्यबाद स्वीकारने का कष्ट करें. पत्रिका पढ़कर मैं पूरी तरह मोहित हो गयी और मुझे भी इससे जुड़ने की अपार इच्छा हुई. संस्थान के विचार मुझे बहुत अच्छे लगे. मैं वार्षिक सदस्यता शुल्क भेज रही हूँ. पत्रिका द्वारा विश्व बंधुत्व को एक सूत्र में बांधने का प्रयास किए हुए विविध लेख, कविता, कहानी, समीक्षाओं से परिपूर्ण अंक के लिए मैं पुनः हार्दिक देना चाहती हूँ. आपकी कृपा सदैव बनी रहे. इसी आस्था के साथ....

ललिता कुमारी प्रजापति, पं. सिंहभूमि, झारखण्ड

++++++++++++++++++++++++++++++++++

आपके द्वारा प्रेषित राष्ट्रीय काव्य संग्रह 'काव्य बिम्ब' मुझे मिल गया है. इसमें ५० कवियों की रचना है. सचमुच संकलन सराहनीय है. जिसमें मेरी भी एक रचना है. संपादक की कलम से पढ़ा, प्रभावित किया, आपने बिल्कुल सही लिखा है. किसी को बात अन्यथा लेने की जरुरत ही नही हैं. यह तो अपनों से अपनी बात है. अंत में यही कहना चाहुंगा कि विश्व स्नेह समाज, का यह कदम हमेशा बढ़ता रहे, और आने वाले समय में हमारी यह संस्था दिन दूनी रात चौगुनी वृद्धि करें. हम आपके साथ है. कृपया स्नेह बनाए रक्खें.

पुरूषोत्तम सिंह राठौर, जांजगीर, चाम्पा, छ.ग.

मशहूर हो गये

कुर्सी पे जा के हलकू जी हुजूर हो गये
किशमिश कभी थे आजकल अंगूर हो गये

विश्वासघात देश की जनता से करके वो
इतने हुए बदनाम कि मशहूर हो गये

अपने शहर की गलियां भी देखी नहीं पूरी
उनके विदेश तक के कई टूर हो गये

मॉगने जब वोट आये तो वे मरहम से लगे
बनके मंत्री कसकता नासूर हो गये

कुर्सी-रूपी सुन्दरी तेरी दुहाई है
कितने नारद मोह में लंगूर हो गये।

जय कुमार 'रुसवा, कोलकाता

++++++++++++++++++++++++++++++++++

आपके द्वारा प्रेषित पत्रिका प्राप्त हुई. आभार. पत्रिका आपकी साहित्य साधना का प्रत्यक्ष प्रमाण है. जिसकी सम्पूर्ण रचना सामग्री उपयोगी एवं महत्वपूर्ण है. साथ ही पुरस्कार वितरण कर सम्मानित करने कार्य सराहनीय है. मेरी शुभकामनाओं सहित हार्दिक बधाई स्वीकारें.

कवि अमित धर्म सिंह, मुजफ्फरनगर, उ.प्र.

++++++++++++++++++++++++++++++++++

आदरणीय द्विवेदी जी

विश्व स्नेह समाज द्वारा हिन्दी तपस्विनी बी.एस. शान्ताबाई पर हाल में प्रकाशित विशेषांक की सूचना मिलते ही इसे पढ़ने की इच्छा हुई. क्योंकि कर्नाटक में जन्मी इस लेडी का हिन्दी के प्रति योगदान के बारे में मैं और अधिक जानना चाहूँगा. यदि सम्भव हो तो एक प्रति भिजवाने का कष्ट करें.

हरिकृष्ण निगम, कांडीवली, मुंबई

++++++++++++++++++++++++++++++++++।

श्रद्धेय द्विवेदी जी,

प्रणाम।

अप्रैल,०९ का अंक मिला। इस अंक में एक विशेष त्रुटि यह है कि मेरे द्वारा मेल किया गया हास्य-व्यंग्य लेख न छाप कर मेरे नाम से पृष्ठ संख्या १३ पर आतंकवाद नामक शीर्षक से किसी का लेख प्रकाशित कर दिया गया है। अतः अगले अंक में इसे सुधारने तथा त्रुटि समाचार प्रकाशित करने की (संभव हों तो मेरे द्वारा जो हास्य-व्यंग्य लेख मेल किया गया था, उसे प्रकाशित करने) का कष्ट करेंगे।

अजय चतुर्वेदी 'कक्का', बीजपुर, सोनभद्र(उ०प्र०

लघु कथाएं

✍ **प्रो० कृष्णा खत्री,** ठाणे, महाराष्ट्र की लघुकथाएं

घर

मैंने सिर्फ एक ही सपना देखा था कि मेरा अपना घर हो, मेरा अपना 'घरवाला' हो. घर में सास-ससुर, जेठ-देवर, जेठानियां, देवरानियां, ननदें और खूब सारे बच्चे हों. मैं भूख के मारे परिवार में पली बढ़ी और भूख के हवाले कर दी गई. बदले में मिला परिवार का पोषण, मुझे मिला यह घर, जो मेरा सपना नहीं था. यहां न सास है, न ससुर, न जेठ न देवर, न जेठानियां-देवरानियां, न ननदें और ना ही 'घरवाला'. यहां घरवाली है दल्ले है, और बहने जो मेरी ही तरह भूख की मारी है. कोई किसी के पेट की भूख की मारी, कोई किसी के तन की भूख की मारी, जो हर पल भूख का निवाला बनती है. निवाला बनते-बनते खुद भी अपना पेट भरती है, अच्छे घर में रहती है, अच्छे कपड़े पहनती है. फिर भी एक 'घरवाला' नहीं मिलता जो सम्मान दे 'घरवाली' का.

यूं तो रोज़ जाने कितने नये-नये पुरुष मिलते है, लेकिन ऐसा कोई नहीं, जो उसे अहसास दिला सके, उसके अपने होने का, स्त्री होने का, मां होने का! मगर अफसोस, उस एक 'घरवाले' के बिना इतने पुरुष मिलके भी कुछ नहीं दे सके. दिया, तो सिर्फ इतना कि अब वह सड़े गोश्त की बदबूदार दुकान बन के रह गई है, जो अब हाइजनिक नहीं बल्कि छूत की गठरी बनी तरस रही है अपने, निहायत अपने 'घर' को.

यह सब देख कर महसूस कर कलेजा मुंह को आता है, जहां मुझे अपने घर का सपना धाराशायी होता हुआ नजर आता है. काश! मेरा अपना घर होता।

ग्लोबलाजेशन

बिट्टू ने मम्मा से पूछा-"मम्मा यह ग्लोबलाइजेशन जो है, क्या पहले भी था?"

"हां, था तो......"

"नहीं.... मेरा मतलब बहुत पहले, जब तुम छोटी थी!

हां....हां, था. मैं क्या, मेरी मम्मा, मम्मा की मम्मा, उनकी भी मम्मा जब छोटी थी तब भी था.

कैसे मम्मा? मेरी तो हिस्ट्री की बुक में तो लिखा है. पहले ऐसा कुछ नहीं था, यह तो बस कुछ सालों से हुआ है.

नहीं बेटे, ग्लोबलाइजेशन तो पहले भी था.

कैसे मम्मा, बताओ ना.

देखो, अब इलेक्ट्रानिक मीडिया ने सब कुछ इतना नजदीक ला दिया है, यह बात सही है, पर चांद, सूरज, आसमान, बादल, नदी, समन्दर, धरती, ये हवा इत्यादि सब भी तो ऐसे कुदरती मीडिया है, जिन्होंने सारे विश्व को एक कर रखा है. यह आकाश और धरती मिले हुए दिखते हैं. वो भी नजदीक! जिस समन्दर किनारे हम खड़े है तो उसके दूसरे किनारे पर किसी दूसरे देश के लोग. जो नदी यहां से किसी दूसरी जगह पर जाती दिखायी देती है जिस नदी का पानी हम पीते हैं, उसका दूसरे शहर वाले भी पीते हैं. फिर यह आसमान तो पूरी धरती पर टोप की तरह छाया हुआ है और ये बादल भी तो सब जगह बरसते है. हैं, ना! अब बताओ, पहले भी ग्लोबलाइजेशन था कि नहीं?

हां, थोड़ा फर्क जरुर है, पहले सिर्फ नेचर के द्वारा बनाया हुआ ग्लोबलाइजेशन था और नेचर के साथ-साथ 'मैन-मेड' भी शामिल हो गया है.

अरें हां, मम्मा! एकदम करेक्ट, कितना सिम्पल! पर किसी को भी पता नहीं मम्मा! कल मैं क्लास में सबको बताऊंगा, सर को भी.

+++++++++++++++++++++

राशिफल सितम्बर २००९

मेष-परिश्रम से लाभ. परिवार में कलह, धन व्यय, प्रेम सम्बंधों में सफलता मिलेगी

वृष-रोजगार में वृद्धि, कार्यो में सफलता, नौकरी में पदोन्नति। धनागम में वृद्धि

मिथुन-कार्य व्यवसाय में प्रगति, धनागम में अप्रत्याशित वृद्धि, जीवन स्तर में सुधार होगा।

कर्क-जमीन जायदाद में वृद्धि, साहस व पराक्रम बढ़ेगा, धन लाभ, स्वास्थ्य मध्य.

सिंह-स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव, आत्म शक्ति बढ़ेगी, शत्रुओं पर विजय, व्यय की अधिकता.

कन्या-धनागम सामान्य रहेगा, मित्रों से सहयोग मिलेगा, शारीरिक कष्ट, स्थान परिवर्तन सम्भव

तुला-व्यर्थ वाद-विवाद, रोजगार में अवरोधा, व्यय की अधिकता, मानसिक परेशानी

वृश्चिक-सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि, रोजगार बढ़ेगा, धन लाभ, व्यवसाय में उन्नति होगी।

धनु-रोगों से कष्ट, स्वजनों का सहयोग, मानसिक अशान्ति, लाभ व व्यय सामान्य रहेगा।

मकर-यात्रा में कष्ट, जीवन साथी से मतभेद, व्यय की अधिकता, माह सामान्य रहेगा।

कुम्भ-व्यवसाय मन्दा रहेगा, परिश्रम से लाभ होगा, संतान से सुख, व्यय सामान्य।

मीन-नौकरी में पदोन्नति, व्यवसाय में सफलता, धर्म में रुचि, धनागम में वृद्धि

पं० संजय कुमार चतुर्वेदी, खीरी, उ.प्र.

पुस्तक समीक्षा

पुस्तक का नामः मानवता के हत्यारे

रचनाकारः गणेश प्रसाद महता

प्रकाशकः सुकीर्ति प्रकाशन, डी.सी. निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल-१३६०२७, हरियाणा

मूल्यः ४० रुपये मात्र

८७ रचनाओं के इस संग्रह मानवता के हत्यारे नामक लघु कथा संग्रह में गणेश प्रसाद महतो ने समाज की वर्तमान दशा-दिशा के बाहयान्तर की झांकी को परखने और उरेहने की अद्भुत महारत हासिल की है. सामान्य भाषा शैली में लिखी गयी रचनाएं लेखक की भाषा में अच्छी पकड़ को दर्शाती है. लेखक ने बड़ी कुशलता से शब्दों का चयन किया है. पूर्वोक्ति में -'यो बेईमानी तो कमोवेश नीच-ऊँच सभी तबके के लोगों में व्याप्त है. मगर मुट्ठी भर धूर्त-चतुर व रिश्वतखोर कर्मचारी-पदाधिकारी अधिकांश भोले भाले इन्सानों को ठग चूसकर सुख-आनंद की जिंदगी बिता रहे हैं.'

पूजा में-'प्रसाद शब्द सुनते ही मां स्तब्ध रह गयी. उसे आत्म विश्वास हो गया कि आज भूखे ही सोना पड़ेगा. दुखी मन लेटे-ही-लेटे इशारा करती हुई बोली-'उस कटोरी में रख दे.'

बिन बंदूक डकैती में 'मुझे यही साड़ी पसंद है. देना है तो दीजिये नहीं तो हम लोग जाते है.' इतना कहकर वह खड़ी होने लगी कि-'अच्छा, तीन सौ ही दीजिये.'

'नहीं दो सौ से अधिक नहीं देगें.' 'सवा दो सौ.....।'

'ना-ना, इससे एक रुपये भी ज्यादा नहीं देगे.'

'एकदम कसम खा लिये है. अच्छा, ले लीजिये।

++++++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः

सुगम-सुबोध हिन्दी व्याकरण

रचनाकारः गणेश प्रसाद महतों

प्रकाशकः सुकीर्ति प्रकाशन, डी.सी. निवास के सामने, करनाल रोड, कैथल-१३६०२७, हरियाणा

मूल्यः ४०/ रुपये मात्र

किसी भी भाषा का शुद्ध रुप और सम्पूर्ण ज्ञान पाने के लिए व्याकरण शास्त्र का अध्ययन आवश्यक है. महाभाष्य में कहा गया है 'सर्ववेदपारिषदं हीदं शास्त्रतमूं' व्याकरण सारे वेद, समस्त दर्शन, आदि का पथ प्रदर्शक है. प्रस्तुत पुस्तक के लेखक गणेश प्रसाद महतो हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी रचनाएं लिखी है इनमें सुगम सुबोध हिन्दी व्याकरण' के नाम से है. हिन्दी व्याकरण की बहुत सी पुस्तकें उपलब्ध है मगर सामान्य पाठकों के लिए बोधगम्य नहीं है. इस पुस्तक के माध्यम से बिना किसी अध्यापक की सहायता से कठिन से कठिन शब्दों को आसानी से समझ सकते हैं.

ऐसे सुन्दर प्रकाशन के लिए इस कृति और कृतिकार को बधाई देता हूँ.

++++++++++++++++++++++++++++++++

पुस्तक का नामः

तलाश उसकी जो हर पल है संग

लेखकः श्री आर.डी.अग्रवाल 'प्रेमी'

समीक्षकः डॉ० जीवराज सोनी

प्रकाशकः ज्ञानमंदिर, सिटी रोड, मदनगंज, किशनगढ़, राजस्थान, ३०५८०१

मूल्यः २५/ रुपये मात्र

पुस्तक की प्रस्तावना में लेखक ने स्पष्ट कर दिया है कि यह कोई कथा, उपन्यास अथवा धार्मिक, उपदेश नहीं बल्कि उनके सद्गुरु महात्मा श्री प्रेम रावत 'महाराजजी' का उपदेशामृत प्रसाद है जिसे वे सुधी एवं सुपात्र पाठको में इस अध्यात्मिक लघु निबन्ध संग्रह के माध्यम से प्रदान कर रहे है, इस संग्रह में विविध शीर्षकान्तर्गत ३७ निबन्धों का एक ही आध्यात्मिक लक्ष्य है.

प्रारम्भिक निबन्धों में परमेश्वर की सर्व व्यापकता तथा समर्पित भाव से ईश्वर का चिंतन, आत्मा का स्वरूप शास्त्रों में वर्णित ब्रम्ह की अवधारणा, भगवप्राप्ति से मुक्ति आदि गहन विषयों पर विवेचन है लेखक श्री 'प्रेमी' तथा उनके गुरूजी श्री प्रेमरावत महाराज जी की मान्यता है कि तुम्हारा असली भगवान तुम्हारे अन्दर है जो कि जीता जागता है, उस भगवान के दर्शन करो, उपनिषद में वर्णित ब्रम्ह शाश्वत, नित्य तथा चैतन्य है ऐसे ब्रम्ह की अनुभूति जीवन को सुखमय तथा आनन्दमय बना देती है. सद्गुरू की महिमा कई निबन्धों में वर्णित है. सच्चे सद्गुरु का मिलना भाग्य की बात है क्योंकि वे लख चौरासी से मुक्त कर देते है. उनकी कृपा से ज्ञान तथा अज्ञान का अंधकार नष्ट होता है. गुरू तत्व एक ऐसी शक्ति है जो इस वसुधा पर नित्य स्थित है. अर्थात नित्यावतार है. गुरू महिमा का वर्णन करते हुए श्री प्रेमजी ने लिखा है-

राम-कृष्ण से को बड़ो, तिन्हू तो गुरू कीन्ह।
तीन लोक के वे धनी, गुरू आगे आधीन।।

पुस्तक में निबन्ध यद्यपि गहन चिंतन वाले विषय है लेकिन इन विषयों को लेखक ने सरल भाषा में संक्षेप में समझाया है. अतः लेखक का प्रयास प्रशंसनीय है. पुस्तक की आवरण सज्जा आकर्षक है तथा मुद्रण बहुत अच्छा है. कम कीमत होने से अधिक से अधिक पाठक इसका लाभ अर्जित करेंगें.

अखिल भारतीय ९७वें कवियों का सहयोग काव्य संकलन 'अष्टकमल'

कहते हैं कविता जीवन का उत्स है. कवि जन्मजात होता है. किसी को कवि बनाया नहीं जा सकता. कवि अति संवेदनशील, सूक्ष्मदर्शी, चिंतनशील, विश्लेषणकर्ता एवं कल्पना शील होता है. कहा गया है, जहॉ न जाय रवि वहॉ जाय कवि. उसका काव्यात्मक एवं लयात्मक स्वभाव उसके कवि कर्म में चार चॉद लगा देता है. बिजनौर निवासी लोकप्रिय कवि डॉ. हितेश कुमार शर्मा की एक दर्जन से अधिक विचारोत्तेजक निबंध पुस्तकें तथा साहित्य की अन्य विधाओं में इससे भी अधिक पुस्तके प्रकाशित व प्रशंसित हो चुकी है. वर्तमान में प्रकाशन कठिन होता जा रहा है ऐसे में सहयोगी संकलन का मार्ग अपनाकर रचनाकारों को प्रोत्साहित करने का सराहनीय प्रयास किया है श्री शर्मा ने. एक सौ चौरानवें काव्य कृतियों के पराग की सुन्दरता से भरपूर अष्टकमल, साजिल्द रंगीन आवरण पर छपे संग्रह की संपादिका श्रीमती उषा शर्मा है. २८ ग़ज़लों के साथ अनेक गीत, मुक्तक, चौपाई, दोहे, हाइकू आदि में पाठकों को विविध मानवीय, सामाजिक एवं राष्ट्रीय सरोकारों से परिपूर्ण सामग्री समाहित है. रचना में केवल नवीनता ही पर्याप्त नहीं होती. कविता में वास्तविक कविता होनी चाहिए. उपभोक्ता, संस्कृति में मॉग पूर्ति के आधार पर व्यवसासियकता हावी हो रही है और शिथिल रचनायें भी लिपिबद्ध हो रही है. यह खेद जनक है. कुछ कवियों की चंद लाइने नमूने के लिए निम्नवत हैः-

मीरा शलभः साचों सिंहो अब तो जागो देश घिरा संकट में,
कॉधे टूटे लाशें ढोते जगह नहीं रही मरघट में.

डॉ० हितेश कुमार शर्मा-
सिफ्त ऐसी हितेश पैदा कर, तेरे हम राह कायनात चलें.

नलिनी विभा नाजलीः-
आदमियत का दे हमें जो सबक, वो ग़ज़ल फिर जरा सुना दीजे

डॉ० सैयद मक़बूल अली-
तोहमत किसी पे सोच समझकर लगाइये,
किरदार पहले खुद का तो अच्छा बनाइये।

डॉ० बी.पी.मिश्र अतीत-
बौद्धिक प्रतिभायें अवहेलित, बढ़े बाहुबलियों में जलवे
घुसे माफिया, तस्कर, संसद, कदाचार के करते गलवे।

विश्वास है काव्य संकलन को सुविज्ञ पाठक रोचक एवं विचारोत्तेजक पायेंगे.

पुस्तक का नामः अष्टकमल

संपादकः डॉ० हितेश कुमार शर्मा

समीक्षकः राजन चौधरी

सपर्कः डॉ० हितेश कुमार शर्मा, एडवोकेट, गणपति काम्पलेक्स, सिविल लाईन्स, बिजनौर-२४६७१०, उ.प्र
मूल्यः २००/ रुपये मात्र (साजिल्द)

प्रकृति चित्रण का द्रष्टव्य काव्य संकलनः सिमट रही संध्या की लाली

सिमट रही संध्या की लाली डॉ. तारा सिंह की नवीनतम काव्यकृति है. कुल बत्तीस कविताओं के इस संग्रह की प्रथम कविता में ही समस्याओं के निदान का अन्वेषणात्मक भाव स्पष्ट हुआ है. सूरज, चॉद, तारागण, मनुजलोक, इन्द्रलोक आदि इन अनन्त जिज्ञासाओं में डूबकर कवयित्रि चिर नवीन स्वप्नों की ओर उन्मुखा है. वह कह रही है कि -तुम्हारे, सुखों को ललकारने का साहस किसने किया है। उसका मत है कि जब तक यह दीप रूपी जीवन आलोकित है तब तक इस संसार में, अपनत्व के सम्बन्ध है.

कवियित्री प्रकृति का चित्रण करने वाली है. जीवन रेती पर सुंदर मुखाकृति शीर्षक कविता में प्रकृति के साथ उनका तादात्म्य स्थापित हुआ है. अतीत की धूप छॉव को वह स्मृतियों में संजोकर चल रही है. वह कहती है, जब भी अतीत का स्मरण करती हूँ तो सॉसे टूटने लगती है. ऋतुपति का कुसुमोत्सव घर यही है. में लगातार प्रकृति के सौन्दर्य का वर्णन देखा जा सकता है. सुदीर्घ कविता में रवि, शशि, तारक, आकाश आदि उपमानों का मानवीकरण हुआ है. ढलती हुई जीवन की संध्या का वर्णन अपने आप में मोहक बन पड़ा है. तारा सिंह के इस संकलन में उल्लेखनीय कविताओं में वही है शाश्वत शोभा का उपवन, तुम्हारी यादों की स्मृति, कॉटों से सेवित है मानवता का फूल यहॉ और एक धार में जग जीवन बहता आदि शीर्षक है. इसके अलावा हिन्द है वतन हमारा, जहॉ तप रहे व्योम और तारा, पथ में पग ज्योति झलकती उसकी, पहले ही दुनिया थी अच्छी, तथा कोई तो मेरा अपना हो में डॉ. तारा ने साहित्यिकता का भली भॉति निर्वहन कियाा है.

पुस्तक का नामः सिमट रही संध्या की लाली

कवयित्रीः डॉ० तारा सिंह

समीक्षकः श्री कृष्ण मित्र, पत्रकार

मूल्यः ६०/ रुपये मात्र (साजिल्द)

प्रविष्टियॉ आमंत्रित है

साहित्य जगत में अत्यधिक लोकप्रिय, विश्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित व अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भी चर्चा की ओर अग्रसित विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान द्वारा २००३ से लगातार साहित्यिककारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्न सम्मान प्रस्तावित है-

साहित्य श्री, डॉ.रामकुमार वर्मा सम्मान, बाल श्री सम्मान, कैलाश गौतम सम्मान, डॉ.किशोरी लाल सम्मान, प्रवासी भारतीय सम्मान, अन्तर्राष्ट्रीय हिंदी सेवी सम्मान, राजभाषा सम्मान,सम्पादक श्री, विधि श्री, डॉक्टरश्री, सैनिक श्री, विज्ञान श्री, प्रशासक श्री, कलाकार श्री, सांस्कृतिक विरासत सम्मान, बाल साहित्यकार सम्मान, पुलिस हिंदी सेवा पदक, युवा पत्रकारिता सम्मान, राष्ट्रभाषा सम्मान, युवा कहॉनीकार सम्मान, युवा व्यंग्यकार सम्मान, युवा कवि सम्मान, विहिसा अलंकरण, दोहाश्री, गज़ल श्री, राष्ट्रीय प्रतिभा सम्मान, राष्ट्रीय युवा प्रतिभा सम्मान आदि प्रदान किएं जाएंगे.

इस वर्ष से निम्न मानद उपाधियां प्रस्तावित है-

हिन्दी रत्न, हिन्दी भाषा रत्न, हिन्दी गौरव, हिन्दी भाषा गौरव, हिन्दी श्री, हिन्दी भाषा श्री.

पुरस्कारों हेतु चयन एक निर्णायक मण्डल द्वारा किया जायेगा जो अंतिम व सर्वमान्य होगा. पुरस्कार हेतु प्राप्त पुस्तकें, रचनाएं लौटायी नहीं जाएगी. ये पुरस्कार इलाहाबाद में गरिमापूर्ण साहित्यिक समारोह में प्रदान किये जायेंगे.

विशेषः १.विस्तृत जानकारी के लिए टिकट लगा जबाबी लिफाफा भेजें अथवा ईमेल करें. २.मानद उपाधियों का निर्धारण मांगी गयी जानकारी के आधार पर किया जाएगा. ३. यह जरुरी नहीं है प्रत्येक वर्ष सभी उपाधियां दी ही जाए. उपाधियां तभी दी जाएगी जब प्राप्त प्रविष्ट्यिां मानक के अनुकूल होगी. इसकी कोई बाध्यता नहीं होगी.

आवेदन प्रपत्र मंगाने की अंतिम तिथिः ३० अक्टूबर २००६

हिन्दी उदय सम्मान हेतु प्रस्ताव आमंत्रित है

हिंदी के विकास के लिए पूर्ण रुपेण सक्रिय विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, इलाहाबाद अपने कार्य क्षेत्र को आगे बढ़ाते हुए इस वर्ष से प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय से हाईस्कूल/इंटरमीडिएट/ स्नातक अंतिम वर्ष में हिंदी विषय में सर्वाधिक अंक पाने वाले छात्रों को सम्मानित करने का निर्णय लिया है. इसमें आपसे आपके विद्यालय /महाविद्यालय में वर्ष २००८ की परीक्षा में हिंदी में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के अंक पत्र, उनका नाम व सम्पूर्ण पता, दूरभाष/मोबाइल सं०/ईमेल प्रधानाचार्य/ विभागाध्यक्ष द्वारा प्रमाणित प्रति के साथ **३० दिसम्बर २००६ तक** आमंत्रित है. सम्मान समारोह फरवरी ०६ में प्रस्तावित है. जिस विद्यालय के छात्र लगातार पांच वर्ष तक सम्मानित होगें उस विद्यालय के हिंदी विषय के अध्यापक/प्रवक्ता/विभागाध्यक्ष को भी सम्मानित करने की योजना है. आशा है आप हमारे आग्रह को स्वीकार कर अपना प्रस्ताव हमें शीघ्र भेजने का कष्ट करें. सभी चयनित छात्रों को गरिमामय कार्यक्रम में **हिन्दी उदय सम्मान** व उपहार सामग्री प्रदान की जाएगी.

अन्य किसी प्रकार की जानकारी व प्रस्ताव निम्न पते पर प्रेषित करें:

सचिव,

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान

एल.आई.जी-१४४/६३, सेक्टर-२, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद

email: sahityaseva@rediffmail.com Mo.: (O) 09335155949,

भारत सरकार एवं यू.जी.सी द्वारा मान्यता प्राप्त

जिसस क्राइस्ट रिजनल पालिटेक्निक

जेल रोड पॉवर हाउस के पास, अंधा खाना, नैनी, इलाहाबाद-२११००८

प्रवेश प्रारम्भ

- ■ तीन वर्षीय डिप्लोमा प्रोग्राम ■ डिप्लोमा इन सिविल इंजीनियरिंग
- ■ डिप्लोमा इन मेकेनिकल इंजीनियरिंग ■डिप्लोमा इन कम्प्यूटर सांइस
- ■ डिप्लोमा इन इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग
- ■ डिप्लोमा इन इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्युनिकेशन इंजीनियरिंग

विशेष

✍ आई.टी.आई.एवं इंटर मैथ के छात्र/छात्राओं को सीधे तीसरे सेमेस्टर में प्रवेश

✍ आकर्षक एवं सुसज्जित कम्प्यूटर लैब, पुस्तकालय, भौतिकी/रसायन प्रयोगशाला, मैकेनिकल एवं इलेक्ट्रिकल प्रयोगशाला ✍ योग्य, अनुभवी तथा प्रशिक्षित फेकेल्टी

सम्पर्क समयः प्रातः ८ बजे से अपरान्ह २ बजे तक

सम्पर्क करें: 0532–2696075, 9415128575

स्नेहांगन कला केन्द्र

(Affiliated With: V.H.S.S.S., Reg. Under Society Act 21,1860)

Nursery Teachers Training (N.T.T.)

Computer Teachers Training (C.T.T.)

संस्थान द्वारा हॉबी कोर्स व डिप्लोमा कोर्स भी चलाये जाते हैं.

1.सिलाई 2.रेशम की कढ़ाई 3.मशीन की कढ़ाई 4.सिंधी कढ़ाई 5.जरदोजी की कढ़ाई 6.जरी की कढ़ाई 7.पॉट डेकोरेशन(12 प्रकार के) 8.आइस्क्रीम 9.बेकिंग (केक,बिस्किट बनाना) 10.कुकिंग 11. इंग्लिश स्पीकिंग कोर्स 12.कम्प्यूटर कोर्स 13.पेंटिग(सभी प्रकार की) 14.ब्लॉक प्रिटींग 15.स्क्रीन पेंटिग 16.पैचवर्क 17.मुकैश 18.रंगोली 19.टाई एण्ड डाई 20.बाटिक 21.स्पंज, स्प्रे प्रयोग 22.फ्लॉवर मेकिंग 23.ब्यूटीशियन 24.बरगद का पेड़ 24. शार्ट हैंड 25. हिन्दी एवं अंग्रेजी टाईपिंग

आकर्षण

☞प्रशिक्षण कार्य योग्य व अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा।

☞महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास।

☞रोजगार का स्वर्णिम अवसर।

निःशुल्क कम्प्यूटर प्रशिक्षण, साक्षात्कार की तैयारी, अत्याधुनिक शिक्षण पद्धति

नयी शाखाएं खोलने हेतु लिखें या सम्पर्क करें:

एल.आई. जी–93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद **मो०:** 09335155949, **ईमेल:** gpfsociety@rediffmail.com

स्वामी, संपादक, प्रकाशक, मुद्रक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा भार्गव प्रेस बाई बाग से मुद्रित कराकर एल.आई.जी–93,नीम सराय, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित किया. **डाक पंजीयन संख्याः** एडी.306/2008–11 R.N.I.N0.-UPHIN2001/8380 **संपादकः** गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी